# <u>मिरा भाईंदर महानगरपालिका</u>

## मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह

**मा. विशेष महासभा दि. १३/०५/२०१५**

आज बुधवार दि. १३/०५/२०१५ रोजी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची मा. विशेष महासभा दुपारी २.३० वाजता सभा सुचना क्र. ०१ दि. ०५/०५/२०१५ रोजीच्या विषयपत्रिकेवर विचार विनिमय करणेकरिता महापालिका सभागृह, ३ रा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह येथे मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली भरली असता खालीलप्रमाणे सदस्य हजर होते.

**<u>उपस्थित सदस्य</u>**

| | | |
|---|---|---|
| १) | जैन गिता भरत | महापौर |
| २) | प्रविण मोरेश्वर पाटील | उपमहापौर |
| ३) | केळुसकर प्रशांत नारायण | सभापती, स्थायी समिती |
| ४) | पाटील रोहिदास शंकर | सभागृह नेता |
| ५) | सामंत प्रमोद जयराम | विरोधी पक्षनेता |
| ६) | सँन्ड्रा जेफ्री रॉड्रीक्स | सदस्या |
| ७) | अशोक सुर्यदेव तिवारी | सदस्य |
| ८) | ॲड. रवि व्यास | सदस्य |
| ९) | कोठारी सुमन रमेश | सदस्या |
| १०) | कांगणे यशवंत ठकाजी | सदस्य |
| ११) | सिंग मदन उदितनारायण | सदस्य |
| १२) | म्हात्रे कल्पना महेश | सदस्या |
| १३) | पिसाळ मनिषा नामदेव | सदस्या |
| १४) | पांडे हंसूकुमार कमलकुमार | सदस्य |
| १५) | निलम हरिश्चंद्र ढवण | गटनेता, शिवसेना |
| १६) | पाटील सुनिता कैलास | सदस्या |
| १७) | वेतोसकर राजेश शंकर | सदस्य |
| १८) | अरविंद दत्ताराम ठाकुर | गटनेता, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना |
| १९) | प्रभात प्रकाश पाटील | सदस्या |
| २०) | प्रेमनाथ गजानन पाटील | सदस्य |
| २१) | मेहता डिंपल विनोद | सदस्या |
| २२) | जयंतीलाल गुरुनाथ पाटील | सदस्य |
| २३) | पाटील वंदना विकास | सदस्या |
| २४) | घरत तारा विनायक | सदस्या |
| २५) | भानुशाली वर्षा गिरीधर | सदस्या |
| २६) | मुन्ना सिंग | गटनेता, अपक्ष |
| २७) | रावल भगवती जयशंकर | सदस्या |
| २८) | शाह राकेश रतिशचंद्र | सदस्य |
| २९) | मेघना दिपक रावल | सदस्या |
| ३०) | पाटील ध्रुवकिशोर मन्साराम | सदस्य |
| ३१) | डॉ. जैन रमेश धरमचंद | सदस्य |
| ३२) | डॉ. राजेंद्र जैन | सदस्य |
| ३३) | मेंन्डोंसा स्टिवन जॉन | सदस्य |
| ३४) | प्रतिभा प्रकाश तांगडे-पाटील | सदस्या |
| ३५) | डॉ. आसिफ गुलाब शेख | सदस्य |
| ३६) | जयमाला किशोर पाटील | सदस्या |
| ३७) | गोविंद हेलन जॉर्जी | सदस्या |
| ३८) | डिमेलो बर्नड अल्बर्ट | गटनेता, राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी |
| ३९) | परमार अनिता भरत | उप-सभापती, महिला व बालकल्याण समिती |
| ४०) | पाटील प्रणाली संदिप | सदस्या |
| ४१) | रकवी सुहास माधवराव | सदस्य |
| ४२) | खण्डेलवाल सुरेश | सदस्य |
| ४३) | पाटील नरेश तुकाराम | सदस्य |
| ४४) | सुजाता रविकांत शिंदे | सभापती, महिला व बालकल्याण समिती |

| | | |
|---|---|---|
| ४५) | मेहता नरेंद्र लालचंद | सदस्य |
| ४६) | पुजारी कांचना शेखर | सदस्या |
| ४७) | काझी रशीदा जमील | सदस्या |
| ४८) | इनामदार जुबेर | गटनेता, भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस |
| ४९) | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहिम | सदस्य |
| ५०) | सय्यद नुरजहाँ नझर हुसेन | सदस्या |
| ५१) | म्हात्रे सुर्यकांत खंडोजी | सदस्य |
| ५२) | डिसा मर्लिन मर्विन | सदस्या |
| ५३) | शाह सिमा कमलेश | सदस्या |
| ५४) | कासोदरिया अश्विन श्यामजी | सदस्य |
| ५५) | डॉ. नयना मनोज वसानी | सदस्या |
| ५६) | जैन दिनेश तेजराज | सदस्य |
| ५७) | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | सदस्य |
| ५८) | विराणी रेखा अनिल | सदस्या |
| ५९) | भोईर भावना राजू | सदस्या |
| ६०) | भोईर राजू यशवंत | सदस्य |
| ६१) | वेंचर गिल्बर्ट मेंन्डोंसा | सदस्य |
| ६२) | अरोरा दिपिका पंकज | सदस्या |
| ६३) | भावसार शिल्पा कमलेश | सदस्या |
| ६४) | वंदना रामदास चक्रे | सदस्या |
| ६५) | कमलेश यशवंत भोईर | सदस्य |
| ६६) | सुमबंड महरूत्रीसा हारूनरशीद | सदस्या |
| ६७) | गावंड मंदाकिनी आत्माराम | सदस्या |
| ६८) | अनिल बाबुराव भोसले | सदस्य |
| ६९) | भगवती शर्मा | नामनिर्देशित सदस्य |
| ७०) | दिनेश दगडू नलावडे | नामनिर्देशित सदस्य |
| ७१) | धनेश परशुराम पाटील | नामनिर्देशित सदस्य |
| ७२) | डॉ. सुशिल अग्रवाल | नामनिर्देशित सदस्य |

**<u>गैरहजर सदस्य –</u>**

| | | |
|---|---|---|
| १) | असेन्ला मेंडोन्सा परेरा | सदस्या |
| २) | जाधव मोहन महादेव | सदस्य |
| ३) | शर्मा सुनिला सत्येंद्र | सदस्या |
| ४) | संध्या प्रफुल्ल पाटील | सदस्या |
| ५) | आमगावकर हरिश्चंद्र रामचंद्र | सदस्य |
| ६) | पाटील वंदना मंगेश | सदस्या |
| ७) | शरद केशव पाटील | सदस्य |
| ८) | शुभांगी महिन कोटियन | सदस्या |
| ९) | बाबरा डॉनल्ड रॉड्रीक्स | सदस्या |
| १०) | रॉड्रीक्स मॉरस जोसेफ | सदस्य |
| ११) | ग्रिटा स्टिफन फॅरो | सदस्या |
| १२) | संदिप मोहन पाटील | सदस्य |
| १३) | बगाजी शर्मिला विन्सन | सदस्या |
| १४) | लियाकत ग. शेख | सदस्य |
| १५) | झिनत रऊफ कुरेशी | सदस्या |
| १६) | कॅटलीन ऍन्थोनी परेरा | सदस्या |
| १७) | शेख शबनम लियाकत | सदस्या |
| १८) | अनिता जयवंत पाटील | सदस्या |
| १९) | म्हात्रे परशुराम पद्माकर | सदस्य |
| २०) | प्रभाकर पद्माकर म्हात्रे | सदस्य |
| २१) | मीरादेवी रामलाल यादव | सदस्या |
| २२) | रविंद्र भिमदेव माळी | सदस्य |
| २३) | दक्षता राजेंद्र ठाकूर | सदस्या |

**<u>रजेचा अर्ज –</u>**
**निरंक**

**नगरसचिव :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची मा. विशेष महासभा बुधवार दि. १३/०५/२०१५ रोजी दुपारी २.३० वाजता मिरा भाईंदर महानगरपालिका, स्व. इंदिरा गांधी भवन, मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृहात महासभा सुचना क्र. ०१, दि. ०५/०५/२०१५ रोजी सोबतच्या विषयपत्रिकेवरील प्रकरणांवर विचार विनिमय करण्यासाठी आयोजित करण्यांत येत आहे. शासनाकडून पत्र आलेले आहे. महाराष्ट्र शासन, नगर विकास विभाग, शासन निर्णय क्र.मिभाम-१११५/४१०/प्र.क्र.२५/१५/नवि-२८, मंत्रालय, मुंबई-४०००३२ दि. ०८ मे, २०१५. संदर्भ -१) बर्नड आल्बर्ट डिमेलो, गटनेता, नॅशनललिस्ट कॉंग्रेस पार्टी, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांचे जा.क्र.एनपीसी/गटनेता/१९/२०१४-१५, दि. ३ मार्च २०१५ चे पत्र. २) आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांचे जा.नं.मनपा/सचिव/१७९/२०१४-१५ दि. २४ मार्च २०१५ चे पत्र. प्रस्तावना - आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी उपरोक्त संदर्भाधीन दि. २४/०३/२०१५ च्या पत्रान्वये, मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या दि. ०२/०३/२०१५ रोजीच्या सभेमध्ये सभागृहामध्ये दि. २६/०२/२०१५ रोजीचे बैठकीचे परिपत्रक वाचून सभेच्या कामकाजास सुरुवात करण्यात आली असे नमूद केले आहे. सभा सुरु झाल्यानंतर मा. महापौरांनी भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पक्षाच्या गटनेत्यांनी “विरोधी पक्षनेता” पदी नगरसेवक श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांना नेमणेबाबत दिलेल्या पत्राचे वाचन केले व भारतीय कॉंग्रेस पक्षाचे नगरसेवक श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांचे “विरोधी पक्षनेता” म्हणून नाव घोषित करण्यात आले. तसेच भारतीय जनता पक्षाचे नगरसेवक श्री. रोहिदास पाटील यांचे “सभागृह नेता” म्हणून नाव घोषित करण्यात आले. ०२. या संदर्भात आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी पुढे असे नमूद केले आहे की, भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पक्ष यांनी विरोधी पक्षनेता या पदावर श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांची नियुक्ती करण्यासाठी केलेले शिफारस पत्र नगरसचिव कार्यालयात दिलेले नाही. ते थेट मा. महापौरांकडे देण्यात आले. सभागृहामध्ये भारतीय जनता पक्षाचे संख्याबळ सर्वात मोठे संख्याबळ म्हणजे एकूण २९ असून त्यांच्या खालोखाल राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पक्षाचे संख्याबळ एकूण २६ व व भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पक्षाचे संख्याबळ १७ असे आहे. सभागृहामध्ये भारतीय जनता पक्षाचे सर्वात मोठे संख्याबळ असल्यामुळे महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १९ एक-अ नुसार सदर पक्षाचे नगरसेवक श्री. रोहिदास पाटील यांची सभागृहनेता पदी नियुक्ती करण्यात आली. तसेच विरोधी पक्षनेता या पदावर श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांची नियुक्तीची घोषणा करण्यापूर्वी देखील सभागृहामध्ये मोठे संख्याबळ असलेल्या पक्षाकडून उमेदवाराच्या नावाची विचारणा करणे अपेक्षित होते. मात्र तसे झाले नाही. त्यामुळे सदर नियुक्तीस राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पक्षातर्फे हरकत घेऊन अधिनियमातील तरतूदीबाबत महापालिका नगरसचिव यांचेकडे विचारणा केली. त्यावेळी महापालिका नगरसचिव यांनी महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम १९ एक-अअ मधील उपलब्ध तरतूद सभागृहाच्या निदर्शनास आणून दिली. सदरची तरतूद खालीलप्रमाणे आहे. “जो निर्वाचित पालिका सदस्य मोठे संख्याबळ असलेल्या विरोधी पक्षाचा त्यावेळी नेता असेल आणि महापौरांकडून ज्याला तशी मान्यता मिळाली असेल, तो विरोधी पक्ष नेता असेल.” ०३. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी उपरोक्त अनुषंगाने पुढे असे नमूद केले आहे की, सभागृहामध्ये भारतीय जनता पक्षाचे सर्वात मोठे संख्याबळ म्हणजे २९ असून त्याच्या खालोखाल राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पक्षाचे संख्याबळ २६ असे आहे व भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस या पक्षाचे संख्याबळ १७ असे असल्यामुळे महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमातील कलम १९ एक-अअ नुसार विरोधी पक्षनेता पदी राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पक्षाचा नेता याची नियुक्ती होणे अनिवार्य होते. परंतु विरोधी पक्षनेता पदी भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पक्षाचे नगरसेवक श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांची मा. महापौर यांनी आपल्या अधिकार कक्षेत केलेली नियुक्ती उपरोक्त तरतूदीशी विसंगत असल्यामुळे सदरचा निर्णय अधिनियमातील कलम ४५१ अन्वये विखंडीत करण्याची आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी शिफारस केली आहे. श्री. बर्नड आल्बर्ट डिमेलो, गटनेता, नॅशनलिस्ट कॉंग्रेस पार्टी, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनीही अशीच विनंती केली आहे. ०४. उपरोक्त नमूद करण्यात आलेल्या पार्श्वभूमीवर आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी केलेल्या शिफारशीच्या अनुषंगाने मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या दि. ०२/०३/२०१५ रोजीच्या सभेत “विरोधी पक्षनेता” निवडीसंदर्भात महापौर, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी घेतलेला निर्णय निलंबित करण्याबाबतची बाब शासनाच्या विचाराधीन होती. शासन निर्णय - महापौर, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी दि. ०२/०३/२०१५ च्या सभेत विरोधी पक्षनेता निवडीबाबत घेतलेला निर्णय महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमाच्या कलम १९ एक-अअ मधील तरतूदीशी विसंगत आहे. त्या अनुषंगाने त्याचप्रमाणे आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांनी शिफारस केल्यानुसार दि. ०२/०३/२०१५ च्या सभेमध्ये भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस पक्षाचे नगरसेवक श्री. प्रमोद जयराम सामंत यांची “विराधी पक्षनेता” पदी निवडीसंदर्भात महापौर यांनी घेतलेला निर्णय महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमाच्या कलम ४५१ (१) अनुसार शासनास असलेल्या अधिकारात निलंबित करण्यात येत आहे. याबाबत संबंधितांना काही अभिवेदन करावयाचे असल्यास त्यांनी ३० दिवसात शासनास सादर करावे. महाराष्ट्राचे राज्यपाल यांच्या आदेशानुसार व नावाने. प्रकरण क्र. १, उत्तन घनकचरा प्रकल्प या ठिकाणी असलेली शेड भाड्याने देणेबाबत.

**वंदना चक्रे :-**

मा. महापौर मॅडम, आपल्या परवानगीने बोलते १४ एप्रिल संदर्भात मला बोलायचे आहे. मला सभागृहाच्या लक्षात आणून द्यायचे आहे. भारतीय राज्य घटनेचे शिल्पकार भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ह्यांची १४ तारखेला जो शासकीय कार्यक्रम लावला होता त्या शासकीय कार्यक्रमामध्ये मा. महापौर, मा. उपमहापौर आणि नगरसेवक उपस्थित नव्हते त्याचा मी निषेध करते. कारण आपण तज्ञ आहात, शिकलेले आहात ज्या बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारताची घटना लिहिली, बाबासाहेब आंबेडकर हे दलितांचे नव्हते तर ते सगळ्यांचे होते. त्या दिवशी परिपत्रक काढतात, ठाण्याचे मंत्री, आमदार, पालकमंत्री, सगळ्यांची नावे टाकली जातात. १४ एप्रिलला सुट्टी असते तेव्हा त्यांच्या प्रतिमेला हार वाहण्यासाठी आमचे दुर्देव आहे की मा. उपमहापौर उपस्थित नव्हते. सन्मा. नगरसेवक / नगरसेविका उपस्थित नव्हत्या. बी.जे.पी. चे श्री. रोहिदास पाटील उपस्थित होते. ह्या महत्वाच्या गोष्टी आहेत. आम्ही मा. आयुक्तांना सांगितले परंतु त्यांचा कर्मचारी वर्ग देखील उपस्थित नव्हता. त्यांनी सांगितले की अशा कार्यक्रमात उपस्थिती पाहिजे. बाबासाहेबांचा अपमान झाला असे मी म्हणते. आपण सर्व सदस्यांना एक परिपत्रक काढा. कधीही आंबेडकर जयंती, शिवजयंती असो की महापुरुषांची जयंती असो त्या जयंतीला कर्मचारी, अधिकारी, नगरसेवक हे उपस्थित असले पाहिजे. परिपत्रक काढा तुम्ही नावे टाका नाहीतर नावे टाकू नका अशी मी तुम्हाला सुचना करतो.

**जुबेर इनामदार :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात उत्तन घनकचरा प्रकल्पाच्या जागेत महानगरपालिकेचा शेड आहे. सदर शेड यापुर्वी ५० मेट्रीक टन कचरा प्रकल्पा अंतर्गत सन २००३ मध्ये बांधण्यात आले. तद्नंतर सदर शेडच्या छपराचे वापर परिवहन उपक्रमा अंतर्गत कार्यशाळेसाठी देण्यांत आले. मात्र सदर ठिकाणी संबंधितांनी कार्यशाळेसाठी जागा वापरण्यास नकार दिला. सदर शेड एकूण क्षेत्रफळ १८१० चौ. मी. असून प्रशासनाने त्याला बाजार भावानुसार भाडेतत्वावर देण्याचा प्रस्ताव सभागृहासमोर मंजुरीसाठी प्रस्तावित केलेले आहे.

ज्याअर्थी मा. जिल्हाधिकारी, ठाणे यांनी पत्र क्र. महसुल क्र.-१/टे-१/एल.बी.पी./कावि-१५७२/२००२ दि. २६/१२/२००२ अन्वये मौजे उत्तन सर्व्हे क्र. २५ व मौजे पाली सर्व्हे क्र. ६५ ज्याचे एकुण क्षेत्र ३१.४६ हेक्टर मिरा भाईंदर महानगरपालिकेस हस्तांतरीत केलेली आहे व मा. सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्देशानुसार घनकचरा व्यवस्थापन व हाताळणी नियम २००० प्रमाणे घनकचरा प्रकल्प कार्यान्वीत करणे बंधनकारक आहे.

सदरहू जागेवर शासन निर्णय महसुल व वन विभागातील परिपत्रक क्र. सीआर-१९०९ ज-५/ दि.४/२/१९८३ तसेच मा. आयुक्त कोकण विभाग यांचेकडील परिपत्रक क्र. आर.बी/डेक्स/ एलएनडी (१)/ परिपत्रक-१०/८८ दि. नुसार महसुल मुक्त विनंतीने विनामुल्य शासनाचे कार्योत्तर मंजुरीच्या अधीन राहून व शासनाचे कार्योत्तर मंजुरीचे आदेशामधील अटी व शर्तीची पुर्तता करणे बंधनकारक झाल्याबाबतचे हमीपत्र महानगरपालिकेकडून घेतलेले आहे.

**अटीशर्तीचे** अ.क्र. ३ प्रमाणे वर्ग करण्यात आलेली जमीन कोणत्याही प्रयोजनासाठी खाजगी व्यक्ती / सरकारी विभागास अथवा सरकारी कार्यालयास शासनाची पुर्वपरवानगीने हस्तांतर अथवा विक्री करता येणार नाही.

अ.क्र. ४ प्रमाणे वर्ग करण्यात आलेल्या जमिनीच्या अतिक्रमापासुन संरक्षण करुन जागेवर अतिक्रमण न होऊ देण्याची जबाबदारी महानगरपालिकेवर राहिल.

तथापी सदर विषय बाबतचा कुठलाही प्रस्ताव महासभेसमोर मंजुरीसाठी आणायचा असल्यास शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्यात यावे. तसेच जागेवर झालेले अतिक्रमण हटविण्याची कार्यवाही करण्यात यावी व भविष्यात अतिक्रमण होऊ नये याबाबतची उपाय योजना करावी असा मी ठराव मांडत आहे. मा. आयुक्त महोदय हा विषय, गोषवारा आपल्या प्रशासनाच्या माध्यमातून आला ही दुर्देवाची बाब आहे. खर तर या जागेवर दुसरा कुठलाही कामकाज ती जागा आपल्याला त्या कामासाठी शासनाने दिली आहे. म्हणून आपल्याला काही करता येणार नाही हा विषय नाही मात्र त्याला शासनाची पूर्व परवानगी घ्यावी लागते. सातत्याने या विषयावर सभागृहात चर्चा झाली आहे. हा शहराचा ज्वलंत विषय आहे. घनकचरा प्रकल्पाचा सध्या तिथे विल्हेवाट लावण्याची प्रक्रिया चालू केली होती ती बंद आहे. फक्त कचरा तेथे डम्प केला जातो. त्याला लॅन्ड फिल केली जाते. जेव्हा ते क्षेत्र हाती घेतल होत तेव्हा तिकडे अतिक्रमण नव्हत. अतिक्रमणचे क्षेत्र वगळून आपल्याला जागा देण्यात आली आहे. आजच्या तारखेत २५ हेक्टर वर अतिक्रमण झालेले आहे. आरोग्य विभागाने तुम्हाला मोघम बोलून झालेले आहे. अतिक्रमण विभागाने परत एक पत्र विभाग प्रमुखाला दि. ३/०१/२०१५ रोजी पाठविले आहे. त्यामध्ये त्यांनी घनकचरा प्रकल्पावर असलेले अतिक्रमण हटवा अशी लेखी मागणी केली आहे. आयुक्त महोदय बऱ्याच अडचणीच्या नंतर या शहरामध्ये हा चांगला प्रकल्प उभारला होता. योगायोग ती चांगली प्रक्रिया व्यवस्थित करु शकला नाही. घाणीच साम्राज्य झाल वास भरपूर झाला म्हणून स्थानिक लोकांनी तिथे विरोध केला. चांगली टेक्नॉलॉजीचा वापर करुन अजून ही करता आल असते आणि केल पाहिजे. सकवार येथे हा प्रकल्प कधी जाईल परमेश्वराला माहिती? ते लोक करु देतात की नाही हेही त्यांनाच माहित. आपल्याला ती जागा प्राप्त आहे त्या जागेचा परिपूर्ण वापर त्याच कामासाठी व्यवस्थित व्हावा. लोकांच्या तक्रारीवर कसा मार्ग काढता येईल. त्या मार्गाचा विचार करुन त्या विषयावर परत पालिकेने बारकाईने नजर टाकून हाताळावा. कारण साहेब प्रक्रिया नाही झाली तर आम्ही सर्वच अडचणीत येऊ. या विषयावर तुम्ही काय केल त्यामुळे तुमचेही पद जाऊ शकते आणि ज्यांनी हा विषय आणला त्यांचेही पद जाऊ शकते. सर्वोच्च न्यायालयाच्या आदेशात हे केलच पाहिजे शहरामध्ये हा एक अति महत्वाचा विषय आहे. राज्य

शासनाचे तुम्हाला आदेश आहेत अतिक्रमण हटवा कुठलाही अतिक्रमण झाला नाही पाहिजे त्याचेही आदेश आहेत. या विषयावर परत एकदा जागेची पाहणी करुन त्याच्यामध्ये परत काय प्रस्ताव नविन आणावा लागला तो महासभेमध्ये तुम्ही मांडावा. महासभा ही शहराची गरज आहे. महासभा याची मंजुरी देईन हा चांगला प्रकल्प परत आपल्याला उभारता येईल धन्यवाद.

**सुहास रकवी :-**

मा. महापौराच्या परवानगीने बोलत आहे कनेक्टिव्हिटी आहे विषयाला आता जे उत्तन घन कचरा प्रकल्पाचे जे आपण भाड्याने देतो आहे साहेब आपल्या मिरा भाईंदरच्या किती तरी मालमत्ता भाड्याने द्यायच्या आहेत त्याच्या बद्दल गेली २ वर्षे आमचे प्रमोद सामंत पाठपुरावा करतात. त्यांनी सुध्दा एक मागणी केली आहे. त्याचा सुध्दा अजुन निकाल लागला नाही. साहेब त्यानंतर आम्ही सुध्दा आमच्या विभागामध्ये ज्या मालमत्ता आहेत ज्या नंतर आपण त्यांचे रिनोव्हेशन करताना खर्च येतो ते सर्व महानगरपालिकेच्या खर्चाने करावी लागतात. त्याबद्दल सुध्दा काही निर्णय घेतले नाही ते काय करतात. एक फाईल त्या डेप्ट्युटीकडे दिली ते परत बॅक टू अधिकारी परत तुमच्याकडे या सगळ्या प्रोसेसमध्ये मालमत्तांचे जे नुकसान होते ते साहजिकच लोकांचे नुकसान होते तर त्यांचे निर्णय तुम्ही लवकर घ्या. हे तर शासनाकडून तुम्ही परवानगी आणणारच आहात त्याच्याकरिता जो झालेला खर्च आहे तो आता परत कसा मिळवता येईल त्यामध्ये शासनाची परवानगी अत्यावश्यक आहे. त्याचेही धोरण निश्चित करा मालमत्ता ज्या आहेत त्या मालमत्ता कोणत्या प्रकारे आपल्याला भाड्याने देता येईल आणि त्याचा रेडी केक्नरचा रेट जो आहे तो कोण ठरवणार ते ठरवून त्या मालमत्तेविषयी तो विषय संपवून घ्या ही विनंती आहे.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

मा. महापौराच्या परवानगीने बोलतो मा. महासभेने यापूर्वी निर्णय घेतलेला आहे की, उत्तनचा घनकचरा प्रकल्प शिफ्ट करण्यासंदर्भात त्यानुसार आपण घनकचरा प्रकल्प सकवार येथे उभारणार आहोत. त्यासाठी शासनाकडून कलेक्टर कडून आपण ७३ लाख रु. पैसे भरुन जमिन खरेदी केली आहे. त्यासाठी आवश्यक परवानगी सुध्दा जलविभागची असो, वनविभागाची असो आपण प्राप्त करुन घेतली आहे. ऑथोरायझेशन सुध्दा प्राप्त झाले आहे. जिल्हाधिकाऱ्याकडून सुध्दा मंजुरी घेतली आहे. वेस्ट टू एनर्जी प्रकल्प त्या ठिकाणी प्रस्तावित केलेला आहे. आता त्याचे टेंडर डॉक्युमेंट तयार करुन घेतले आहे. टेंडर डॉक्युमेंट तपासून घेतले आहे. तसेच पी.पी.पी चे एक्सपर्ट जे सक्षम आहेत त्याच्याकडून तपासून घेतले आहे. आता ४-५ दिवसात त्याची निविदा निघणार आहे. त्यामुळे वेस्ट टू एनर्जी प्रकल्प महानगर शासनाने रिकमंड केलेला आहे. तो प्रकल्प त्या ठिकाणी आपण राबवणार आहोत. त्याचप्रमाणे तळोजा इकडे देखील पत्रव्यवहार केलेला आहे त्याचे देखील उत्तर अपेक्षित आहे. जर तळोजाने आपला प्रकल्प घेतला तर सकवारचा नंतर निर्णय घेण्यात येईल. दोन्ही कारवाई चालू आहेत. उत्तनच्या इकडे जी जागा आहे प्रकल्पावर आपली शेड आहे. मा. महासभेने ह्यापूर्वी निर्णय घेतलेला आहे. परिवहन विभागासाठी शेड उभी करण्यासंदर्भात दि. ११/१२/२०१३ च्या महासभेने निर्णय घेतलेला आहे. सदर बस डेपोत १०० बसेस उभ्या करण्यासंदर्भात पार्किंग करुन गॅरेज उभारण्यासाठी त्यासाठी १ कोटी ३९ लाख रुपये खर्च करुन प्रकल्प उभा केलेला आहे. आता शेड तयार आहे. वर्ल्ड बँकेने पाहणी केली आणि वर्ल्ड बँकेने सांगितले की हा डेपो उपयोगाचा नाही आणि ती वास्तू अशीच पडून राहील. १५-२० लाख वार्षिक भाडे येईल त्या हेतूने हा धोरणात्मक निर्णय घेण्यासाठी हा विषय मा. महासभेत घेतला आहे.

**जुबेर इनामदार :-**

आम्ही चूकलो, सभागृह चुकले. प्रशासन विषय देताना तेही चूकले. तुमच्या समोर शासनाचा आदेश आहे तुम्ही देऊ शकत नाही आम्ही तसा विरोध करत नाही. पालिकेला रेव्हेन्यू प्राप्त होत असेल तर होऊ द्या. शासनाची पूर्वपरवानगी आणा.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

वर्ग करण्यात आलेली जमिन कोणत्याही खाजगी व्यक्तिस सरकारी विभागास, सरकारी कार्यालयास शासन परवानगी शिवाय हस्तांतर म्हटले आहे आणि विक्री म्हटले आहे. आपण भाड्याने देणार आहेत आणि शासनाची पूर्व परवानगी घेणार आहोत. आपण १.५० खर्च करुन ............................

**जुबेर इनामदार :-**

आम्हाला मान्य आहे. आम्ही कुठे बोलतो तुम्ही नका करु. शासनाची परवानगी घ्या. परवानगी शिवाय करु नका. आमच्या सदस्याचे सदस्य पद रद्द होईल तुमच्या नोकऱ्या जातील.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

आम्हाला ती जाणीव आहे. म्हणून पूर्व परवानगी घेऊनच करणार?

**जुबेर इनामदार :-**

आधी परवानगी घ्या त्यानंतर हा विषय ................

**(सभागृहात गोंधळ)**

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

उद्या शासनाने विचारले की ह्या संदर्भात महासभेचा ठराव काय आहे म्हणून ठराव करुन घेतो. शासनाची पूर्व परवानगी घेतो. नंतर निविदा काढून ते प्रोसेस करणार.

**(सभागृहात गोंधळ)**

**जुबेर इनामदार :-**

परवानगी घेऊन हा विषय सभागृहासमोर आणा आम्ही परवानगी देऊ.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

शासन ठराव मागते.

**सुहास रकवी :-**

शासनाच्या परवानगीला ठराव अत्यावश्यक आहे. हे तुम्ही बोलले पाहिजे. जेव्हा ठराव कराल तेव्हा शासनाकडे मागणी कराल ना. तसा तुम्ही त्या विषयामध्ये उल्लेख करा.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

तसे ठरावामध्ये घ्या.

**जुबेर इनामदार :-**

हा विषय पुन्हा महासभेसमोर आणा.

**रोहिदास पाटील :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात उत्तन घनकचरा प्रकल्पाच्या जागेत महानगरपालिकेची शेड आहे. सदर शेड यापुर्वी ५० मेट्रीक टन कचरा प्रकल्पातंर्गत सन २००३ मध्ये बांधण्यात आली होती. तद्नंतर सदर शेडच्या छपराचे काम परिवहन उपक्रमातंर्गत कार्यशाळेस वापरण्यासाठी करण्यांत आले. तथापि सदर ठिकाणी कार्यशाळा करण्यास संबंधितांनी नकार दिल्याने सद्यस्थितीत सदर शेड वापराविना पडून आहे. सदर शेडच्या संदर्भात बांधकाम विभागामार्फत झालेला एकूण खर्चाची चौकशी करुन अहवाल सादर करावा. शेडचे एकूण क्षेत्रफळ १८१०.०० चौ. मी. असून चालू बाजारभावानुसार (Ready Recknor) या शेडच्या जागेचे वार्षिक रू. १९,४४,०००/- एवढे भाडे होत आहे. सदर शेड वापरण्यासाठी भाडयाने दिल्यास महानगरपालिकेस उत्पन्न मिळून शेडची देखभाल होऊ शकेल. तेव्हा सदरची शेड भाडयाने देण्यासाठी शासनाची पूर्वपरवानगी घेऊनच निविदा काढण्यास ही सभा मंजुरी देत आहे.

तसेच भविष्यात स्थावर व जंगम मालमत्ता सर्व प्रकारे भाडयाने देण्यासाठी खालीलप्रमाणे धोरण राहील.

१) महानगरपालिकेने चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) दर निश्चित करण्यासाठी नियुक्त केलेल्या द्विस्तरीय समितीत बांधकाम व नगररचना विभागाचे अधिकारी यांनी निश्चित करून दिलेल्या चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) प्रमाणे मूल्य ठरवावे.
२) सदर मालमत्तेची बाजारभावाप्रमाणे मुल्य ठरल्यानंतर जाहिर निविदा प्रसिध्द करावी.
३) निविदाद्वारे प्राप्त देकार मंजुरीसाठी मा. स्थायी समितीची मंजुरी घ्यावी.

तसेच यापुढे महापालिका मालकी हक्काच्या स्थावर व जंगम मालमत्ता चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) च्या दरावर निविदा काढून मा. स्थायी समितीची मंजुरी घेऊन करावी. त्यासाठी ही महासभा महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम - ७९ (क) (द) व (इ) नुसार यापुढे मा. आयुक्तांना अधिकार देण्यात येत आहे. असा मी ठराव मांडत आहे.

**निलम ढवण :-**

माझे अनुमोदन आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

ठरावात कुठे लिहिले आहे शासनाची मंजुरी घेऊन .....................

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

गोषवाऱ्यात लिहिले आहे. प्रत्येक गोष्ट आपण नमूद करत नाही.

**प्रमोद सामंत :-**

गोषवाऱ्यात डिटेल द्यायचे ना. गोषवाऱ्यात असे द्यायला पाहिजे होते की आम्ही शासनाची मंजुरी घेऊन मगच करणार आहोत.

**सुहास रकवी :-**

काकांनी सांगितल्याप्रमाणे मालमत्ता ज्या आहेत ते अधिकार तुमच्याकडे दिले आहेत पण त्याचा लवकर निपटारा करावा अशी विनंती आहे.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

धोरण निश्चित करुन घेतले आहे.

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौर मॅडम, सन्मा. सभागृह ह्या ठिकाणी आता जो घनकचऱ्याचा विषय झालेला आहे. घनकचरा प्रकल्प उभा करण्यासाठी शासनाने आपल्याला महानगरपालिकेकडून थोडीफार किंमत घेऊन ७५ एकर जमिन आपल्या महानगरपालिकेला दिलेली आहे. ज्यावेळी जिल्हाधिकाऱ्यांनी ही जमिन जेव्हा आपल्याला हस्तांतरीत केली त्याच्यात पहिली कंडीशन टाकली की ह्याच्यामध्ये काय वेगळा वापर करायचा असेल किंवा ही जागा कुणाला हस्तांतरित करायची असेल किंवा ही जागा तुम्हाला विक्री करायची असेल तर त्यासाठी शासनाची पूर्व परवानगी लागते. हे आपल्या सर्वांना माहित आहे. जेव्हा महानगरपालिका प्रशासन स्थानिक स्वराज्य संस्थेकडें अशा गोष्टी घेऊन जाते त्यावेळी पहिल्यांदा विचारले जाते की महासभेचा ठराव द्या. म्हणून आपण महासभेचा ठराव घेतो आणि शासनाची पूर्व परवानगी घेतल्याशिवाय काही कारवाई केले जाणार नाही

असे वचन मी सभागृहाला ह्याठिकाणी देतो. आपल्याला शासनाकडे प्रस्ताव पाठवायला लागेल आणि शासनाने मंजुरी दिली तरच करायला लागेल. कारण आपण शेड बांधली आहे. आपल्याच महासभेने त्याला मान्यता दिली आहे. त्याच्यावर करोडो रूपयाचा खर्च झाला आहे आणि ते सडत पडले आहे. महानगरपालिकेचे आर्थिक हित विचारात घेता आम्ही हा प्रस्ताव आपल्याकडे आणलेला आहे. मी स्वतः त्याठिकाणी व्हिजीट केली होती आणि व्हिजीट केल्यानंतर लक्षात आले की ही शेड आपल्याला बस थांब्यासाठी वापरता येईल का ? परंतू वर्ल्ड बॅकेच्या लोकांनी ते अमान्य केलेले आहे. तर त्यामूळे तिथे आमच्या बस ठेवता येणार नाही. त्यांनी अमान्य केल्यामुळे काय करायचे आपला प्रोसेसिंग प्लान्ट चालू होईपर्यंत म्हणजे आता टेंडर प्रोसेसमध्ये आहे ह्या आठवडयापर्यंत किंवा मन्थ एन्डपर्यंत त्याचे होईल. आणि ते झाल्यानंतर त्यांना लागणार आहे की नाही ते आपल्याला माहित नाही. तोपर्यंत शासनाकडे हा प्रस्ताव पाठवू शासनाकडून मंजूरी आल्यानंतरच ही कारवाई पूढे करणार आहोत त्याच्यमूळे ह्याच्यामध्ये काय काळबेरे करण्याचा किंवा शासनाच्या विरोधात निर्णय घेण्याचा किंवा जिल्हाधिका-यांनी जी जागा ज्या कारणासाठी दिली त्याचा गैरवापर करण्याचा काही हेतू नाही त्यामुळे शासनाची मान्यता झाल्यावरच पूढील कारवाई करण्यात येईल एवढे मी ह्याठिकाणी सांगू इच्छितो. धन्यवाद.

**निलम ढवण :-**

मा. महापौर मॅडम, एक सुचना आहे. आता जी शेड भाडयाने देण्यासंदर्भात ठराव झालेला आहे. परंतू एका पर्पजसाठी एखादी वास्तू वापरायची असेल तर ह्यापूढे बांधताना काळजी घ्यावी एकतर ज्याच्यासाठी बांधली त्याच्यासाठी वापरावी नसेल तर त्याचा पूर्ण विचार करून महानगरपालिकेचा किंवा लोकांचा जो पण ह्याच्या उभारणीसाठी २ करोड खर्च झाले आहे तर असा अनाठायी खर्च होणार नाही अशी काळजी आपण घ्यावी अशी मीसुचना करते.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

मा. आयुक्त साहेब सदर जागेचा आपण सर्व्हे केलेला आहे का ? शासनाने जी ७५ एकर जागा दिलेली आहे. त्याचा सर्व्हे केलेला आहे का? टी.एल.आर केले आहे का? आणि जे अतिक्रमण आहे ते हटवले आहे का?

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

कोणता विषय बोलता सकवार की उत्तनचा बोलता?

**प्रेमनाथ पाटील :-**

घनकचरा उत्तनचे बोलतो.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

टी.एल.आर केले नाही मोजमापणी झाली नाही.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

मोजमापणी झाली नाही मग आपल्याला कसे माहित पडणार की ७५ एकर जागा आपल्याला दिली आहे.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

आगाऊ ताब्यात दिलेली आहे. पजेशन दिलेले आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

मोजणी केली की नाही आता करा.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

आपण शासनाला काही रक्कम दिलेली आहे.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

घनकचरा प्रकल्पासाठी नाव आहे .

**(सभागृहात गोंधळ)**

**प्रमोद सामंत :-**

त्याची बाऊन्ड्री दिशा फायनल करा. किती अतिक्रमण आहे ते काढा. अतिक्रमण आहे का? किती?

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

भरपूर आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

ते अतिक्रमण काढणार कधी?

**प्रमोद सामंत :-**

तुमच्या माहितीप्रमाणे किती तुम्ही प्रकल्प चालवता.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

एक्झाक्ट मला सांगता येणार नाही?

**प्रमोद सामंत :-**

साहेब, तुम्ही प्रकल्प चालवता देखरेख करता तुमच्या ताब्यातली जागा आहे. त्यावर किती अतिक्रमण आहे ते आपल्याला माहिती असले पाहिजे.

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

ह्यावेळेला सांगता येणार नाही.

**प्रमोद सामंत :-**

अतिक्रमण अधिकारी असतील त्यांना विचारा.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

पानपट्टे साहेब घनकचरा प्रकल्प कधी चालू केलेला आहे? शासनाने जागा कधी दिलेली आहे. त्या जागेचा सर्व्हे टी.एल.आर केला की नाही त्या जागेमध्ये अतिक्रमण आहे ते काढले की नाही. शासनाला मोबदला ऑलरेडी दिलेला..................

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

ती जागा मोफत मिळालेली आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

त्या जागेची समथिंग अमाऊन्ट दिलेली ना. मग त्या जागेचा सर्व्हे तर करायला पाहिजे ते कधी करणार?

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

टाऊन प्लानिंग डिपार्टमेन्टची कारवाई चालू आहे.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

टाऊन प्लानिंगला विचारा कारवाई चालू आहे का ?

**संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-**

मा. आयुक्तांनी मंजूरी दिली आहे. टाऊन प्लानिंग डिपार्टमेन्ट आणि जिल्हाधिकारी त्यांची संयूक्त मोजणी करणार आहेत .

**जुबेर इनामदार :-**

आरोग्य विभागाने आपली भुमिका मांडली आहे. मा. आयुक्त साहेब अतिक्रमण हटविण्याची चांगली अग्रेसिव्ह भुमिका घेतात. ७५ एकर जागा आपल्या हाती लागणार नाही एवढा मोठा भुखंड आहे. साहेब त्याची संरक्षण करणे आपली जबाबदारी आहे. आपल्याला शासनाचे आदेश आहेत. ऑन पेपर आहेत आपल्याला केले पाहिजे. ती भुमिका तुम्ही घ्या टी.एल.आर काढा. एक टी.एल. आर. काढून घ्यायचा असेल काढून घ्या. अतिक्रमण काढून घ्या.

**प्रेमनाथ पाटील :-**

कधी पर्यंत काढणार?

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौर मॅडम, जिल्हाधीकारी कार्यालयाकडून घनकचरा प्रकल्पासाठी जी जमिन आपल्या मनपाला स्वाधीन केलेली तर ती माझ्या माहितीप्रमाणे ७५ एकर जमिन आहे आणि त्याचा ७/१२ आहे देताना ७/१२ वर जेवढा रेकॉर्ड आहे तेवढा दिलेला आहे ती देताना मोजणी करून देणे असे आपण जिल्हाधिका-याना बोलू शकत नाही परंतू आपल्या मनपाने जेव्हा दिली तेव्हा पासून आतापर्यत त्याचा टी एल आर करून घ्यायला पाहिजे होता. पण माझ्या माहितीनूसार जो झालेला नाही. त्याच्यामूळे माझ्या हद्दीत अतिक्रमण किती झाले किती नाही हे मी कर्न्फम सांगू शकत नाही. त्याच्यामूळे त्याठिकाणी संयूक्त मोजणी करून घेण्यात येईल. आणि मोजणी झाल्यानंतर जे अतिक्रमण आमच्या हद्दीमध्ये असेल त्याच्यावर त्या ठिकाणी १००टक्कें कारवाई करण्यात येईल असे मी सभागृहाला अभिवादन देतो.

**बर्नड डिमेलो :-**

मा. महापौर मॅडम, उत्तन घनकचरा प्रकल्पातील शेड भाडयाने देण्याचा जो विचार केला. वर्षाला २० लाख भाडे येईल. मारवाडीपणाचे एक चांगले गणित मांडले आहे. २० लाख रूपये ८ लाख पब्लिकला इन्कम वाढीव उत्पन्न करण्याचा आपण जो चांगला प्रकल्प मांडलेला आहे. म्हणजे पर माणसी २.५० रू. म्हणजे वर्षाला इन्कम होईल. आपल्या नागरिकाला असा तुमचा प्रस्ताव आहे. मी त्याच्यामध्ये एक सुचना मांडत आहे जो धनकचरा प्रकल्प आहे तो घेतलेली जमिन ट्रान्सफर होईल तेव्हा होईल आपल्या तीनही बाजूला समुद्र किनारा आहे डोगराळ भाग आहे. उन येते कधी समुद्रामध्ये तुफान येतात कधी त्सूनामी येईल कधी भूकंप येईल अशा काळासाठी आपल्या मनपाने लोकांना ट्रान्सफर करायचे झाले तर अशा जागा आहेत का? जिथे जिथे कानाकोपरा पडला आहे तो भाडयाने देऊन उत्पन्न कसे वाढवता येईल त्याच्यावर आपण जास्त भर देतात. त्या बद्दल मी सर्वाचे स्वागत करतो. परंतू नेपाळमध्ये मोठा भुकंप झाला. भुकंपामध्ये लोकाना कूठे हलवायचे कूठे बाहेर राहावे लागले तर अशा परिस्थितीत आपल्या मिरा भाईदर महानगरपालिकेमध्ये लोकांना हलवण्याकरिता किंवा लोकांना राहण्यासाठी अशा प्रकारचा आसरा किंवा धर्मशाळा आपल्याकडे आहेत का? आणि जर तो डेपोचा तिकडे करु शकले नाही आणि कोणताही प्रकल्प केला नाही पण तिकडे लोकांना संकटकाळी ठेवले तर त्याच्यात काय आहे. म्हणून ह्या विषयावर चर्चा करावी. २० लाख शहरासाठी मोठी नाही २.५० रु. तुम्ही वर्षाला वाढवता इकडे लोकांकडून हजारो रुपये दंडाने काढता आणि २.५० रुपये देण्यासाठी एवढा गाजावाजा करता, शासनाने दिलेली जागा नागरिकांसाठी आणि शहराच्या चांगल्या भवितव्यासाठी आणि संकटसमयी जे उपयोगात पडेल असे काही तरी प्रकल्प आणि प्रोजेक्ट करावे अशी माझी विनंती आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

बर्नड साहेबांचा ठरावाला विरोध आहे का?

**भगवती शर्मा :-**

ही आमची सुचना आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

सुचना म्हणजे काय त्यांना नाही द्यायचे का? मा. महापौर मॅडम, नक्की करा.

**बर्नड डिमेलो :-**

आम्ही जो ठराव दिला आहे त्यात शासनाची मंजुरी घ्यावी असा दिला आहे. जर तुम्हाला करायचे असेल तर ही माझी सुचना म्हणून घ्या नाही तर ठराव परत द्या. तुम्हाला वाटत असेल की असे करायला पाहिजे पुन्हा एकदा घेऊन त्याच्यामध्ये सुचना लिहून देतो.

**प्रकरण क्र. ०१ :-**

उत्तन घनकचरा प्रकल्प या ठिकाणी असलेली शेड भाड्याने देणेबाबत.

**ठराव क्र. ०१ :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात उत्तन घनकचरा प्रकल्पाच्या जागेत महानगरपालिकेची शेड आहे. सदर शेड यापुर्वी ५० मेट्रीक टन कचरा प्रकल्पातंर्गत सन २००३ मध्ये बांधण्यात आली होती. तद्नंतर सदर शेडच्या छपराचे कामाचा वापर परिवहन उपक्रमातंर्गत कार्यशाळेस वापरण्यासाठी करण्यांत आले. तथापि सदर ठिकाणी कार्यशाळा करण्यास संबंधितांनी नकार दिल्याने सद्यस्थितीत सदर शेड वापराविना पडून आहे. सदर शेडच्या संदर्भात बांधकाम विभागामार्फत झालेल्या एकूण खर्चाची चौकशी करुन अहवाल सादर करावा. शेडचे एकूण क्षेत्रफळ १८१०.०० चौ. मी. असून चालू बाजारभावानुसार (Ready Recknor) या शेडच्या जागेचे वार्षिक रू. १९,४४,०००/- एवढे भाडे होत आहे. सदर शेड वापरण्यासाठी भाडयाने दिल्यास महानगरपालिकेस उत्पन्न मिळून शेडची देखभाल होऊ शकेल. तेव्हा सदरची शेड भाडयाने देण्यासाठी शासनाची पूर्वपरवानगी घेऊनच निविदा काढण्यास ही सभा मंजुरी देत आहे.

तसेच भविष्यात स्थावर व जंगम मालमत्ता सर्व प्रकारे भाडयाने देण्यासाठी खालीलप्रमाणे धोरण राहील.

१) महानगरपालिकेने चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) दर निश्चित करण्यासाठी नियुक्त केलेल्या द्विस्तरीय समितीत बांधकाम व नगररचना विभागाचे अधिकारी यांनी निश्चित करून दिलेल्या चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) प्रमाणे मूल्य ठरवावे.

२) सदर मालमत्तेची बाजारभावाप्रमाणे मुल्य ठरल्यानंतर जाहिर निविदा प्रसिध्द करावी.

३) निविदाद्वारे प्राप्त देकार मंजुरीसाठी मा. स्थायी समितीची मंजुरी घ्यावी.

तसेच यापुढे महापालिका मालकी हक्काच्या स्थावर व जंगम मालमत्ता चालू बाजारभावाप्रमाणे (Ready Recknor) च्या दरावर निविदा काढून मा. स्थायी समितीची मंजुरी घेऊन करावी. त्यासाठी ही महासभा महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम - ७९ (क) (द) व (इ) नुसार यापुढे मा. आयुक्तांना अधिकार देण्यात येत आहे.

ज्याअर्थी मा. जिल्हाधिकारी, ठाणे यांनी पत्र क्र. महसुल क्र.-१/टे-१/एल.बी.पी./कावि-१५७२/२००२ दि. २६/१२/२००२ अन्वये मौजे उत्तन सर्व्हे क्र. २५ व मौजे पाली सर्व्हे क्र. ६५ ज्याचे एकुण क्षेत्र ३१.४६ हेक्टर मिरा भाईंदर महानगरपालिकेस हस्तांतरीत केलेली आहे व मा. सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्देशानुसार घनकचरा व्यवस्थापन व हाताळणी नियम २००० प्रमाणे घनकचरा प्रकल्प कार्यान्वीत करणे बंधनकारक आहे.

सदरहू जागेवर शासन निर्णय महसुल व वन विभागातील परिपत्रक क्र. सीआर-१९०९ ज-५/ दि.४/२/१९८३ तसेच मा. आयुक्त कोकण विभाग यांचेकडील परिपत्रक क्र. आर.बी/डेक्स/ एलएनडी(१)/परिपत्रक-१०/८८ दि. नुसार महसुल मुक्त विनंतीने विनामुल्य शासनाचे कार्योत्तर मंजुरीच्या अधीन राहून व शासनाचे कार्योत्तर मंजुरीचे आदेशामधील अटी व शर्तीची पुर्तता करणे बंधनकारक झाल्याबाबतचे हमीपत्र महानगरपालिकेकडून घेतलेले आहे.

**अटीशर्तीचे** अ.क्र. ३ प्रमाणे वर्ग करण्यात आलेली जमीन कोणत्याही प्रयोजनासाठी खाजगी व्यक्ती / सरकारी विभागास अथवा सरकारी कार्यालयास शासनाची पुर्वपरवानगीने हस्तांतर अथवा विक्री करता येणार नाही.

अ.क्र. ४ प्रमाणे वर्ग करण्यात आलेल्या जमिनीच्या अतिक्रमापासुन संरक्षण करुन जागेवर अतिक्रमण न होऊ देण्याची जबाबदारी महानगरपालिकेवर राहिल.

तथापी सदर विषय बाबतचा कुठलाही प्रस्ताव महासभेसमोर मंजुरीसाठी आणायचा असल्यास शासनाची पुर्वपरवानगी घेण्यात यावे. तसेच जागेवर झालेले अतिक्रमण हटविण्याची कार्यवाही करण्यात यावी व भविष्यात अतिक्रमण होऊ नये याबाबतची उपाय योजना करावी असा मी ठराव मांडत आहे.

**सुचक :- श्री. रोहिदास पाटील** **अनुमोदन :- सौ. निलम ढवण**

**ठराव सर्वानुमते मंजूर**

**सही/-**

**महापौर**

**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

**नगरसचिव :-**

प्रकरण क्र. २, ॲन्टी करप्शन ब्युरो कार्यालयातून लाचलुचपत प्रकरणी अटक करण्यात आलेले महानगरपालिकेतील अधिकारी/कर्मचारी यांच्यावर मा. न्यायालयात अभियोग दाखल करणेकरीता मा. आयुक्त यांनी दिलेल्या मंजूरी प्रकरणाचे अवलोकरण करणे.

**भगवती शर्मा :-**

अवलोकनामध्ये ठराव होतात का? आजपर्यंत ठराव झालेले नाही.

**आसिफ शेख :-**

मा. आयुक्तांनी आयुक्तांच्या अधिकाराचा वापर केला आहे त्यामुळे पूढचा विषय घ्या.

**भगवती शर्मा :-**

त्यांनी मा. आयुक्तांना काय दिलेले आहे ते वाचा.

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. आयुक्त महोदय, आपण जो अवलोकनाचा विषय सादर केलेला आहे. ह्या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेला ज्यावेळी अधिकाऱ्यांवर ॲन्टी करप्शनची कारवाई झाली त्यानंतर आपण त्यांना निलंबित करतो सस्पेंड करतो. टाईम बिईंग आपण केले आहे. काही लोकांना ६ महिन्यांच्या वरती घेतले तर मा. महासभेची मान्यता घेतली आहे. परंतु नंतर त्यांना २/३ पगार ही द्यावा लागतो. आपण त्यांना परत कामावर रुजू करुन घेतो प्रशासनाची भुमिका दरवेळी वेगवेगळी असते. काही अधिकाऱ्यांना रुजू करुन घेतो काही लोकांना घेत नाही. म्हणजे नक्की मा. आयुक्तांनी ठरवाव की पगार वाचवण्यासाठी त्यांना रुजू करुन द्यायचे आहे का? किंवा नाही घ्यायचे असेल तर काही लोकांना घेतात. माझ्या माहितीप्रमाणे काही अधिकाऱ्यांना घरी बसून त्यांना पगार देतो. मा. आयुक्तांनी त्याच्यावर एकदाच निर्णय घ्यावा. जे अधिकारी बाकी असतील त्यांना कामावर रुजू करुन घ्या त्यांना घरी बसून पगार द्यायची गरज नाही. त्यांना अशी कुठलीही जबाबदारी देऊ शकता ज्या महत्वाच्या बाबी नाही पण एक निर्णय झाला पाहिजे. दरवेळेस याला घ्या त्याला घ्या. त्याला ठेवा याला ठेवा असे न करता एकदाच काय तो निर्णय करावा की ६ महिन्यांच्या वरती झाल्यानंतर त्यावर आयुक्त महोदयांनी मताने खुलासा करावा असे किती अधिकारी आपल्याकडे अजुन प्रलंबित आहेत. ज्याच्यावर विभागीय चौकशी .......................

**आसिफ शेख :-**

सन्मा. सदस्य श्री. नरेंद्र मेहता यांनी आता विषय उपस्थित केला आहे. किती-किती लोक अजून घरी आहेत? त्यांची विभागीय चौकशी सुरु आहे. मला तर असे म्हणायचे आहे की, प्रशासन आपल्या पध्दतीने चालते आता काय आम्ही मागच्या वेळी त्या ठिकाणी होतो आता या ठिकाणी आलो, हिंदी मध्ये एक कहावत आहे कफन बदल गया लाश वही है। सांगायचे तात्पर्य हे की सत्ताधिकारी विरोधात गेले काय किंवा सत्तामध्ये आले काय प्रशासन हे आपल्या पध्दतीने चालते तर माझे या ठिकाणी अस म्हणणे होते की, आयुक्त महोदय सभागृहात वारंवार चर्चा होत असते म्हणजे अधिकारी पदाधिकारी कर्मचाऱ्यांच्या संदर्भात आता आपल्याकडे मी असे म्हणणार नाही की सगळेच अधिकारी नालायक आहेत काही लोक निश्चितपणे चांगले काम करत आहेत. तातडीने फटाफट निर्णय घेतात. पण काही लोक जे आहेत ते आपल्या गतीनेच चालत आहेत. मग ते लाथो के भूत बातो से नही मानते म्हणून आयुक्त महोदय काय करतात या सभागृहात चर्चा होते आणि मग आपण म्हणतो चला याला निलंबित करा त्याला निलंबित करा. मागच्याच दोन महासभेमध्ये चर्चा झाली की हा प्रभाग अधिकारी काम करत नाही तो प्रभाग अधिकारी काम करत नाही ताबडतोब निलंबित करतो उद्याच्या उद्याच करतो असे आयुक्त महोदय आवेशाने सांगतात पण नंतर मग आम्ही ऑर्डर बघतो की ज्याला निलंबित करायचे आहे त्यालाच २-२ प्रभागाचा चार्ज दिला आहे म्हणजे आंधळा मागतो एक डोळा आणि आयुक्त महोदय देतात दोन डोळे. माझे आयुक्तांना असे म्हणणे आहे आपण फार सक्षम आहात. या मिरा भाईंदरचे कल्याण करायला आपण आले आहात आमच्या आपणास शुभेच्छा आहे. परंतु अधिकाऱ्यांच्या व कर्मचाऱ्यांच्या बाबतीत जे निर्णय घेताना मला असे वाटते की अजिबात निलंबित करु नका कोणी कितीही चुका केल्या तर त्या चुका माफ करुन टाका. कारण प्रशासन असेच चालते ना. आमदार महोदयांनी तक्रार केली. मुख्यमंत्र्यांकडे आपल्या अधिकाऱ्यांच्या विरोधात मुख्यमंत्र्यांनी चौकशीचे आदेश दिले तर आपलेच चौकशी अधिकारी की त्यांची चौकशी करा आणि अहवाल द्या. चौकशी काय करणार विषय वेगळा होता. चौकशी करण्याचा अधिकार तुमचा नाही तरी आलाय पण दिल्यानंतर सुध्दा त्याचा नक्की अर्थ काय? हा एक महत्वाचा विषय आहे पत्र कशाला देण्यात येते अधिकाऱ्यांना भिती दाखवण्यासाठी येते की आमची तातडीची कामे होत नाही म्हणून करण्यासाठी दिले जाते काय कळत नाही माझे असे स्पष्ट मत आहे आणि सगळ्या सदस्यांची हिच भावना असेल की आपण अधिकाऱ्यांना निलंबित करतो पुन्हा त्यांना सन्मा. मेहता साहेब म्हणतात त्याप्रमाणे घरी बसून पगार द्यावा लागतो त्यापेक्षा निलंबित करु नका आणि जर नाइलाज झालाच सुसंवाद होत नाही काही नाही काही चर्चा होत नाही. सुसंवाद होत नाही किंवा सुसंवाद होऊन देखील जर करायचे असेल तर याच्या पुढे आयुक्त महोदय त्याच्यापुढे एक लाईन टाका की एक महिना घरी बस पुन्हा कामाला ये. सभागृहात सारखे-सारखे विषय यायला नको. प्रशासनाचे सगळे निर्णय तुम्हीच घ्यायला पाहिजे. हा निर्णय तुम्ही घेतला परवानगी दिली अवलोकन झालेले आहे. पण ह्या माध्यमातून अधिकाऱ्यांच्या निलंबनाचे विषय येतात तर तुम्ही कोणाला निलंबित करु नका असे आमचे स्पष्ट मत आहे. काही होतच नाही ना. निलंबन झाल्यावर अधिकाऱ्यांवर किंवा प्रशासनावर काय फरक पडला का? ह्यापूढे अधिकाऱ्यांना निलंबीत न

करता त्यांना जे-जे करता येईल ते करु द्या. प्रशासनाचा धाक राहायला पाहिजे. आजपर्यंत धाक राहीलाच नाही. आम्ही २०-२० वर्ष नगरसेवक आहोत. प्रभात ताई, ग्रिटा फॅरो २५ वर्ष नगरसेविका आहेत. काही फरक पडत नाही. फक्त आम्ही इकडचे तिकडे जातो तिकडचे इकडे येतो. एवढाच फरक येतो. प्रशासन आपल्या गतीने चालत असते. त्याचा फायदा दोघ घेतात. तुम्ही सत्ता विरोधी होते तेव्हा तुम्ही हेच बोलत होते. मला काय बोलायचे आहे ते अधिका-यांना समजले आहे. त्या पध्दतीने कारवाई करावी.

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. महापौर मॅडम, मी अधिका-यांना पाठीशी घालत नाही. त्याबद्दल खुलासा झाला पाहिजे. नक्की आपण काय करायला पाहिजे. काही वेळेला आयुक्त महोदय प्रस्तावित करतात की ह्यांना परत घ्यावे. काही वेळेला आपण पेंडींग ठेवतो. मा. आयुक्तांनी एक निर्णय घ्यावा. आसिफ शेखचे म्हणणे बरोबर आहे. लाश भी कफन भी थी पण आता त्यांना माहित नाही. अब लाश भी नही है और कफन भी नही है। यह जिंदा लोगो का सभागृह है। और यहाँ पे काम होके दिखाऐंगे। इस सभागृह में लाशवाले नही चलेंगे, काम करनेवाले चलेंगे। चांगली लोक आता आलेली आहेत. अच्छे दिन आए है, शहर के अच्छे दिन रहेंगे।

**आसिफ शेख :-**

अच्छे दिनचा विषयच नाही. लोक आता वैतागलेली आहेत. व्यापा-याचे अच्छे दिन आले आहेत नागरिकांचे नाही.

(सभागृहात गोंधळ)

**जुबेर इनामदार :-**

निलंबीत केलेल्या व्यक्तिला परत निलंबीत करता येते का? चौकशीच्या अधीन राहून परत घेतलेल्या व्यक्तिला परत निलंबित करता येते का? करता येत असेल तर करा. ह्या सभागृहाने ह्या आधीच्या सभेमध्ये एका व्यक्तिचे निलंबन चौकशीच्या अधीन राहून रद्द करा असा आम्ही ठराव केला आम्ही अनुमोदन दिलेले आहे. ह्या सभागृहाने त्याला मंजुरी दिलेली आहे. तो व्यक्ति कामावरच येत नाही प्रभाग अधिकारी श्री. स्वप्निल सावंत ह्यांना प्रभागाची परत जबाबदारी दिली पण तो कामावर रुजू होत नाही. २३ तारखेला एक दिवस कामावर आला आणि महानगरपालिकेला अजून एक खटल्याच्या समोर परत पाठवला. अजून एक बोजा पालिकेच्या डोक्यावर दिला आहे. एक अतिक्रमण तोडायला गेला ते तोडले नाही त्याला संधी दिली तो कोर्टात गेला त्याला स्थगिती प्राप्त झाली त्याने आल्या-आल्या अजून एक कांड केलेले आहे. त्याच्यावर बडतर्फाचीच कारवाई केली पाहिजे. निलंबन ही कारवाई होऊ शकत नाही. जी व्यक्ति या पालिकेचे आर्थिक नुकसान करायला बसले आहेत. पालिकेचा पैसा हा तुमचा आणि आमचा नाही. हा शहरवासियांचा आहे. करदात्याचा पैसा आहे त्याच्यातूनही पालिका चालते. अधिकारी असे वागत असतील तर मिसयूज आहे त्यांना कोणाला जबाब द्यायचा नाही. ह्या विषयावर आपण जातीने लक्ष द्या आणि योग्य निर्णय घ्या.

**मदन उदितनारायण सिंह :-**

मा. आयुक्त साहेब ह्याच्यावर खुलासा करा.

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौर मॅडम, सन्मा. सभागृहात ज्या विषयावर चर्चा झालेली आहे. त्याच्यावर मी खुलासा करु इच्छितो. मा. आमदार महोदयांनी सांगितले की दरवेळेला प्रस्ताव येतो. आपल्याकडे चार कर्मचारी सध्या निलंबित झालेले आहेत त्याच्यामध्ये यादव, पाटील, गायकवाड आणि शिंदे हे अॅन्टी करप्शनमध्ये ट्रॅप झालेले आहेत. वेगवेगळ्या तारखांना हे लोक गेलेले आहेत. चार्जशिट पोलिस स्टेशनला दाखल होते आणि चार्जशिट दाखल झाल्यानंतर आपण पुढील कारवाईसाठी परवानगी देतो. चार्जशिटनंतर ते आपली परवानगी मागतात. त्याच्यामुळे असे जर घडले तर हा ठराव सभागृहात येत राहणार स्वप्निल सावंत बद्दल बोलतात तर मागच्या महासभेत त्यांचे निलंबन कंटीन्यू ठेवायचे की त्यांना कामावर घ्यायचे ह्या बद्दलचा प्रस्ताव ह्या सभागृहात मांडला होता. आपणच त्याला परवानगी दिली की त्यांना कामावर घ्या. आणि आपणच म्हणता की असे अधिकारी आहेत आमचे काम करत नाही. आपले अधिकारी किती सक्षम आहेत हे मी बोलण्या ऐवजी आपणच ह्या ठिकाणी बोलतात. आम्ही शासनाकडे किमान ४ सहा. आयुक्त द्यावे असा प्रस्ताव दिलेला आहे. परिवहन उप-आयुक्त आमच्याकडे दिले पाहिजे. परिवहनसाठी एक परिवहन व्यवस्थापक आणि उप-व्यवस्थापक एक उप-आयुक्त नाहीत त्या उप-आयुक्तांची मागणी केलेली आहे. आरोग्य अधिका-यांची मागणी केलेली आहे. जो-जो स्टाफ कमी आहे त्यांची मागणी केलेली आहे. पण आजच्या तारेखला कार्यालयाला कुलूप लावून चालत नाही. कोणावर तरी काम भागवून घ्यावे लागते. आपण म्हणता ह्या अधिका-याला डबल चार्ज दिला तर त्याच्यामध्ये असे आहे की त्याची चौकशी चालू आहे. चौकशी झाल्यानंतर आवश्यकता वाटली तर निलंबीत करण्यात येईल. निलंबीत करुन लगेच कामावर घेणे असे नाही त्याची प्रोसीजर आहे. मी कोणाचे नाव नाही घेणार काही लोकांना कारवाई करण्याबद्दल आदेश दिल्यानंतर कर्मचारी टाळाटाळ करतात. आपल्या नगरसेवकांची मागणी असते की साहेब इथे असे होते, तिथे असे होते. आम्ही २-३ वेळी सांगून कर्मचारी समजा आरोंगट वागत असेल तर त्याला निलंबीत केले पाहिजे. परंतु अशा आरोंगट कर्मचा-याचा प्रस्ताव सभागृहात आल्यानंतर बडतर्फीचा प्रस्ताव आपल्याकडे पाठवल्यानंतर आपण त्याला यस केले पाहिजे पण त्यावेळेस आपण सहानुभूती दाखवता म्हणून ह्या कर्मचा-यांची मग्रूरी वाढते ह्या गोष्टीचा सामोपचाराने विचार केला पाहिजे. आपण बोलतात ते बरोबर आहे की एक अतिक्रमण तोडायला कारवाई करायला गेला आणि त्याने स्थगिती मिळवली आता ती स्थगिती उठवण्यासाठी स्पेशल लिव्ह पिटीशन दाखल करायला लावले आहे.

म्हणजे एका-एका गोष्टीची दखल आपण घ्यायची आणि प्रभाग अधिकाऱ्याने काहीच काम करायचे नाही. आता तो दोन दिवस रजेवर गेलेला आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. आयुक्त साहेब आपण आता सांगितले की मागच्या सभेत आम्हीच तो निर्णय घेतला आपण तो गोषवारा वाचावा आपण त्यामध्ये प्रोसेस फॉलो केल नव्हत त्याच्यात म्हटले होते चौकशी करायची आहे. आम्ही सांगितले चौकशी केली नाही. तर निर्णय द्यायला अहवाल कुठे आहे. कोणत्या कामासाठी आपण त्याला दोषी ठरवले आहे त्याचा सभागृहाला अहवाल पाहिजे. आणि कोणत्याही अधिकाऱ्याला पाठीशी घालायचे काही कारण नाही. अतिक्रमण बाबत सत्ताधारी असू द्या किंवा विरोधी असू द्या. सर्वांची अडचण आहेच ह्या सभागृहामध्ये आम्ही ऐकले नाही की अधिकाऱ्याला पाठीशी घातले आहे. आपण तो निर्णय घ्या एखादा अधिकारी दोषी असला आपण आणा आणि आम्हाला बडतर्फीचा विषय द्या. आम्ही तयार आहोत. अधिकारी दोषी असेल तर त्याच्यावर कारवाई झाली पाहिजे. आयुक्त साहेब आपण कॅप्टन ऑफ द शिप आहोत. सर्व अधिकारी आपल्या आदेशावर काम करत असतात. एखादी कारवाई सांगितल्यावर जाणून बूजून त्यांना संधी देण हे आपल्याला आणि आम्हालाही दिसून येते की, हे जाणूनबूजून झालेले आहे. हे माहिती पण पडले नाही पाहिजे पण इकडे संबंधीत इंटरेस्टेड व्यक्ति असतो त्याला फोन जातो की अस-अस हे होणार आहे. आपल्या अधिकाऱ्यांवर कारवाई नाही तर जे दोषी असतील त्याच्यावर गुन्हा दाखल करा. शासनाच्या निर्णयाप्रमाणे ह्यांना माहित आहे की आपण जरी निलंबित झालो तर ६ महिन्यांनी परत येऊ. आपला पगार चालू आहे. जसे आपण सांगितले कधी आम्हाला हाताशी धरुन कधी त्यांना हाताशी धरुन कुठून सोर्स आपण पून्हा कामावर रुजू होईल ह्याची त्यांना खात्री आहे. आपण आतापर्यंतची पार्श्वभूमी बघितली तर ह्या महापालिकेत तसेच झाले आहे की सर्व अधिकारी कामावर रुजू झाले आहेत. जर दोषी असून त्यांना पाठीशी घातले असेल तर त्याच्यावर गुन्हा दाखल करा आम्ही कोणालाही समर्थन करणार नाही. स्वप्निल सावंतची चौकशी करा. सभागृहापूढे निलंबितसाठी नाही तर बडतर्फीसाठीच तो विषय आपण सादर करा.

**आसिफ शेख :-**

मा. महापौर मॅडम, सन्मा.आयुक्तांनी जो खुलासा केलेला आहे आयुक्तांनी सांगताना हे सांगितले की अधिकारी आपल्याकडे कमी आहेत. आपण प्रतिनियुक्तीवर सहा. आयुक्त आणि आयुक्ताची मागणी केलेली आहे. ते आपल्याकडे येतील तर आपल्या कामाचे विकेद्रीकरण होईल अशी मला अपेक्षा आहे. परंतू आता महानगरपालिकामध्ये एका अधिकाऱ्याच्या अधिकारात दूसऱ्या अधिकाऱ्याचा हस्तक्षेप वाढला आहे. ह्या संदर्भात आम्ही पत्र दिले आहे. आपल्याकडे आलेले दोन सहा. आयुक्त हे शोभेचे बाहूले आहेत असे मी म्हणेन त्याच्याकडे आपण अधिकारच दिले नाही. पाणपट्टेसाहेबाकडे आरोग्याचा अधिकार आहे. अर्धा भाग पून्हा दूसऱ्याकडे दिला आहे. कुरळेकर होते त्याच्याकडे एक अधिकार होता त्यांचा एक अधिकार आणखी तिसऱ्याकडे नागरिकांची कामे वेळोवेळी होत नाही. कर निर्धारक,कर संकलक हे काम पूर्वी दिपक सांवत पाहत होते त्यांना सगळे निर्णय घ्यायचे अधिकार होते परंतू आता त्या आदेशाचा काट देऊन पून्हा तो चार्ज दूसऱ्याकडे वर्ग करण्यात आला. माझे स्पष्ट म्हणणे आहे की, आपण सत्तेचे विकेंद्रीकरण करणे आपली राज्यघटना आहे. राज्यघटनेच्या ७४ व्या कलमानुसार अधिकाराचे विकेद्रीकरण झाले पाहिजे आपल्याकडे विकेंद्रीकरण होत नाही. आपल्याकडे अधिकाऱ्याला विकेंद्रीकरण होत नाही त्याचे अधिकाऱ्यांचे केंद्रीकरण झाले आहे. प्रत्येक अधिकारी तो सहा. आयुक्त असो, एक्झीकेटीव्ह इजिनियर सिटी इंजिनियर असो नगररचनेचा अधिकारी असो किंवा कोणताही अधिकारी असो त्यांना जो अधिकारी असो त्यांना जो अधिकार दिला आहे त्यांचे निर्णय घ्यायचा अधिकार त्यांना दिला पाहिजे. त्यांनी आयुक्ताच्या नियंत्रणाखाली काम केले पाहिजे. त्याचे अर्धे काम दूसऱ्याकडे द्यायचे असे प्रकार चालले आहेत. त्यामूळे अधिकारी अधिकारीमध्ये सत्ता सघंर्ष मोठया प्रमाणात सुरू आहे. आणि ह्या सत्ता संघर्षामुळे आमदार महोदयाना मुख्यमंत्र्याकडे तक्रार करायला लागते ही अंत्यत दुर्देवाची बाब आहे.ही दुःखद बाब आहे. असे व्हायला नाही पाहिजे खरे म्हणजे हे आपले संपूर्ण कूटूंब आहे. ह्या कूटूंबाचे आपण प्रमूख आहेत त्यांनी म्हटले आहे. कॅप्टन ऑफ द शिप म्हणजे कॅप्टन ऑफ द शिपला रिमोट कंट्रोल नसावा अशी अपेक्षा आहे. अधिकाऱ्याना पाठीशी घालण्याचा आमचा प्रश्न नाही आपण गोषवारा देताना स्वंयस्पष्ट गोषवारा द्यायचा. कोणाला घाबरायची आवश्यकता नाही. मा.आयुक्तमहोदय, शासनानी पाठवलेला आहे. आपण शासनाचे प्रतिनिधी म्हणून आपल्याला महापौरापेक्षा जास्त अधिकार आहेत. मा. आयुक्त महोदय शासनानी पाठवलेला आपल्याला महापौरापेक्षा जास्त अधिकार आहेत. मा. आयुक्त म्हणून संक्षमपणे आपण काम करा. सगळया अधिकाऱ्यांना अधिकार देऊन टाका.

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौर महोदया, डॉ. साहेबांनी जे निवेदन ह्या सभागृहात केले आहे. त्याच्याबद्दल मी त्यांना थोडक्यात सांगू इच्छितो की माझ्यावर कोणाचाही दबाव आला नाही किंवा कोणीही प्रेशराईज केले नाही. त्याच्यामुळे विनाकारण कोणावर हेतूपूरस्पर कोणत्याही पदाधिकाऱ्यावर आरोप करू नये. कारण ह्या सभागृहामध्ये आपण जे निवेदन केले की सहा. आयुक्त शोभेचे बाहूले आहेत. प्रशासनाने कोण माणूस कूठे कॅपेबल आहे हे ठरवायचा अधिकार माझा आहे. तर तो अधिकार आपण छिनून घेऊ नये.

**(सभागृहात गोंधळ)**

**आसिफ शेख :-**

आम्ही आपला अधिकार छिनून घेत नाही.

**मा. आयुक्त सो. :-**

तुम्ही माझा अधिकार छिनण्याचा प्रयत्न करता आणि म्हणता तुम्ही दबावाखाली काम करता.

**(सभागृहात गोंधळ)**

**आसिफ शेख :-**

आम्ही आरोप करत नाही. आम्ही असे सांगतो आपण असे करू नका.

**प्रमोद सामंत :-**

मा. महापौर मॅडम ह्या शिपचे कॅप्टन मा. आयुक्तसाहेब आहेत. त्यांनीच चालवायचे आहे. त्यांच्या तोंडी आदेशानुसार कारवाई होत असते. लिखीत आदेश पण लागत नाही. पण काही गोष्टी अशा असतात की लिखीत आदेश असून कारवाई होत नाही. ह्यामध्ये सर्व सभागृह सहमत असेल निलंबनाचे ठराव मांडतो तर चौकशीचे अहवाल किती दिवसाने येणार? २-२ वर्ष झाली तरी आपल्याकडे चौकशीचे अहवाल येत नाही. चौकशीसाठी किती वेळ लागला पाहिजे.

**मा. आयुक्त सो. :-**

दोन वर्षात कोणाचा अहवाल आला नाही. नाव सांगा.

**प्रमोद सामंत :-**

तुम्ही सांगा चौकशीसाठी दिवस किती लागतात.

**मा. आयुक्त सो. :-**

दोन वर्षापासून कोणाचेच प्रलंबित नाही आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

तुम्ही किती दिवसात देतात ते सांगा.

**मा. आयुक्त सो. :-**

चौकशी ती चौकशी आहे ती दोन महिन्यात पण पूर्ण होते एक महिन्यात, तीन महिने, सहा महिने पण लागतात.

**प्रमोद सामंत :-**

त्याचा काही कालावधी असेल ना?

**मा. आयुक्त सो. :-**

किमान सहा महिन्याचा कालावधी लागतो.

**प्रकरण क्र ०२ :-**

ॲन्टी करप्शन ब्युरो कार्यालयातून लाचलुचपत प्रकरणी अटक करण्यात आलेले महानगरपालिकेतील अधिकारी/कर्मचारी यांच्यावर मा. न्यायालयात अभियोग दाखल करणेकरीता मा. आयुक्त यांनी दिलेल्या मंजूरी प्रकरणाचे अवलोकन करणे.

**ठराव क्र ०२ :-**

**सदर विषयाचे गोषवा-यानुसार अवलोकन करण्यांत आले.**

**नगरसचिव:-**

प्रकरण क्र. ३, मालमत्ता कर आकारणी व वसुली बाबत आढावा घेणे.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

मॅडम विषय असा पाहिजे होता की, मिरा भाईदर महानगरपालिकेमध्ये कर निर्धारक संकलक या विषयावरती करामध्ये मालमत्ता कर यांच्यावर विषय घ्यायला पाहिजे होता. तुम्ही म्हटले आहे वसुली बाबत आढावा घ्या.

**नरेंद्र मेहता :-**

सन्मा. सदस्य श्री. ध्रुवकिशोर पाटील सभागृहात ही चर्चा झाली होती कि, टॅक्सचे अनेक विषय आहेत. अनेक सदस्यांच्या काही भावना आहेत. काही सुचना आहेत. कर आकारणी बाबत, वसुलीबाबत, दंडात्मक आणि सुरूवात आकारणीपासून सुरू होते. वसुलीपर्यंत कर आकारणीची प्रक्रिया चालू असते. पूर्ण विषय आकारणी ते वसूलीपर्यत त्यामध्ये पूर्ण विषय आलेला आहे.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

विषय असा आहे मालमत्ता कर आकराणी व वसूलीबाबत आढावा घेणे. असे म्हटले पाहिजे होते नागरिकांच्या तक्रारी काय यांच्याबाबत आढावा घेणे. तुम्ही विषय काय दिलेला आहे. आकारणी व वसूली बाबत आढावा घेणे. आढावा घ्या.

**प्रमोद सामंत :-**

गेल्या वर्षीच्या वसूलीचा आढावा घ्या.

**स्वाती देशपांडे :-**

मा. महापौर यांच्या मान्यतेने, सन २०१४-१५ च्या आर्थिक वर्षात एकूण मागणी १२७ कोटी होती. त्याच्या अगेन्स्ट ९१ कोटी वसूल झालेली आहे. आपण जाणता की डिमांड निश्चित नाही आहे. सामान्य करांची डिमांड होती ६५ कोटी आणि त्याच्या अगेन्स्ट ४८ वसूल झाली आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

मॅडम तुम्ही म्हणता डिमांड निश्चित नाही आहे मग त्याच्यासाठी काय कारवाई केली?

**स्वाती देशपांडे :-**

अनेक कारणांसाठी डिमांड निश्चित नाही आहे. दुबार मालमत्ता आपल्याकडे नोंदवल्या गेल्या आहेत. अनेक ३-४ वर्षांपूर्वीच्या पावत्या खतवल्या नाहीत. त्यामुळे त्या पावत्या अजूनही रिफ्लेक्ट होत आहेत ते एक कारण आहे शिवाय तिसरे कारण हे की, निर्लेखित मालमत्ता आपल्याकडे आहेत अंदाजे १४ कोटीच्या त्याच्यावर कारवाई झालेली नाही. अशा अनेक कारणांनी सुधारीत देयके अनेक प्रलंबित होते. अशा प्रकारच्या अनेक कारणांमुळे आपली डिमांड निश्चित नाही आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

निर्लेखित मालमत्ता १४ कोटींची आहे. गेल्यावर्षी आपण १३ कोटी वसूली केली. नेमकी किती वसूली झाली पाहिजे होती.

**स्वाती देशपांडे :-**

१२७ कोटी ही अंदाजपत्रकात दिलेली फिगर आहे. डिमांड निश्चित करण्याची कारवाई चालू आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

आपण काय करतो?

**स्वाती देशपांडे :-**

आपण फस्ट ऑफ ऑल ज्या आपल्या जुन्या पावत्या आहेत ३-४ वर्षांपूर्वीच्या खतवण्याचा प्रोग्राम लावलेला आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

त्याने डिमांड निश्चित होईल का?

**स्वाती देशपांडे :-**

तेच डिमांड निश्चित करतो आहोत.

**प्रमोद सामंत :-**

ज्या पावत्या तुम्ही खतवल्या आहेत त्या खतवून झाल्यानंतर डिमांड निश्चित होईल का?

**स्वाती देशपांडे :-**

त्या पावत्या खतवणे शिवाय दुबार मालमत्ता ज्या संगणकामध्ये नोंदल्या गेलेल्या आहेत त्या आपल्याला रद्द करायच्या आहेत. ह्या शिवाय अनेक सुधारित देयके, चुकीची बिल लोकांना गेली आहेत. ते सुधारण्याचे काम चालू आहे. प्रत्येक बिलाची चूक सुधारत गेलो तर आपली डिमांड निश्चित होईल.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

मॅडम ह्याच्यामध्ये शास्तीची १०.५० कोटी रक्कम ..................

**नयना वसाणी :-**

मॅडम, आपण सांगता डिमांड जी आहे ती आपल्याला कळेल. आपल्याकडे कोणत्या सालापासून डिमांड रजिस्टर मेन्टेन केलेले आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

मा. महापौराच्या मान्यतेने, डिमांड रजिस्टर संगणक प्रणाली ज्या वर्षी ॲक्सेप्ट केली त्या वर्षाच्या रिपोर्टमध्ये डिमांड रजिस्टर उपलब्ध आहे. ते काढून मा. आयुक्तांचे सर्टिफाय करुन देणे अभिप्रेत होते. प्रत्येक वॉर्ड आणि आपल्याकडे ठेवणे अभिप्रेत होते परंतु तशा प्रकारची कारवाई झालेली नाही.

**नयना वसाणी :-**

का झाली नाही? कारण काय? त्याची तुम्हाला गरज वाटली नाही? तुम्ही रजिस्टर मेन्टेन केले नाही तर नविन कर आकारणी तुम्हाला कशी कळेल. बजेटच्या मिटींगला मी लेखी पत्र दिले आहे. त्याचे मला आजपर्यंत उत्तर मिळाले नाही.

**स्वाती देशपांडे :-**

मा. महापौराच्या परवानगीने नविन कर आकारणी प्रकरणे मिळाल्यापासून त्याचे प्रॉपर रजिस्टर मेन्टेन केलेले आहे. मी त्याची माहिती मा. महापौराना दिलेली आहे.

**प्रमोद सामंत :-**

आता डिमांड रजिस्टर तुम्ही संगणीकृत देता ते हाती देणे गरजेचे नाही का?

**स्वाती देशपांडे :-**

जेव्हापासून संगणक प्रणाली अस्तित्वात आली तेव्हापासून हाती लिहिणे बंद केले होते.

**प्रमोद सामंत :-**

ते गरजेचे आहे की नाही.

**नयना वसाणी :-**

वर्षाला किती रुपये आपण सॉफ्टवेअर अपडेशनसाठी खर्च करतो. संगणक आल्यानंतर ते सॉफ्टवेअर डेव्हलप का नाही आहे? जर तुम्ही मॅन्यूअली करत नाही जर तुमच्याकडे कम्प्यूटर सिस्टम आहे. सॉफ्टवेअरवर आपण अपडेशनसाठी वर्षाला किती खर्च करतो. मग ह्याचे सॉफ्टवेअर अपडेट करुन घेणे गरजेचे नाही का?

**हंसुकुमार पांडे :-**

मॅडम ओपन लॅन्ड टॅक्स कितना बाकी है।

**नयना वसाणी :-**

तुम्ही सांगता डिमांड रजिस्टर मॅन्यूअली नाही केले. तुमच्याकडे संगणक सिस्टम सुरु झाली त्यानंतर तुम्ही नाही केले मग त्याच्यामध्ये का नाही झाले. सॉफ्टवेअर अपडेट करणे गरजेचे होते ना आणि दरवर्षी तुम्ही आम्हाला दाखवता की एवढे सॉफ्टवेअर अपडेशनचे खर्च झाले.

**स्वाती देशपांडे :-**

आजही संगणकाच्या रिपोर्टमध्ये मागिल रजिस्टर उपलब्ध आहेत ते आपण काढून घेऊन सर्टिफाय करुन देऊ शकतो आणि आपण तसे देतोय.

**राजेंद्र जैन :-**

मॅडम आप झूट बोल रहे है, आप गलत बोल रहे है। आपके पास मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका अधिनियम के अंतर्गत जो पाँच साल में डिमांड रजिस्टर बनना चाहिए। स्टँडिंग कमिटी के सामने पेश करना चाहिए। और मा. आयुक्त की मंजुरी देनी चाहिए। प्रॉपर्टी रजिस्टर आपके पास नही है और नगरपालिका अधिनियम खूद ही भंग कर रहे है। दो साल पहले महासभा में बोला था तब मा. आयुक्त साहब ने बोला करते है तबसे हर साल फॉलो अप कर रहा हूँ करते है, लेकिन आप अभी तक कर नही पाए। आर बिना डिमांड क इतना बाकी है यह सब बकवास है। डिमांड रजिस्टर के बिना बात करना झिरो है। दुसरी बात जब जब आपसे बात हुई की डिमांड रजिस्टर तयार क्यों नही है तो आपका जवाब क्या था की, हमारे पास संगणक नहीं है। मा. आयुक्त महोदय को हमने बोला तो एक भी ऑर्डर ऐसा नही है मैंने स्टँडिंग में बारबार बोला वसूली जरुरी है। कमसे कम संगणक मिलना, लिपिक मिलना उसके लिए आदेश निकालिए की आपके पास में ऐसी व्यवस्था रहेगी की टॅक्स वसूली में कमी नही पडेगी। वो आज तक आप कर नही पाए।

**नयना वसाणी :-**

नविन कर आकरणी तुम्ही कशी करता तुम्हाला डिमांड माहित नाही.

**राजेंद्र जैन :-**

स्टँडिंग कमिटी में मैंने बार-बार बोला वो मिटींग में आपने चूप किया। स्टॅन्डिंग में जवाब दिया २० करोड फिर आए ४० करोड पे फिर लाए ६० करोड पे स्टँडिंग कमिटी में देशमुख साहबने मुझे आश्वासन दिया साहब मैं पिछे पडा हूँ देखना मैं सबका नापता हूँ मैं करके देता हूँ। देढ-दो महिने में करके देता हूँ। मैंने उनसे एक ही बात पूछी टाऊन प्लानिंग व्हर्सेस टॅक्स डिपार्टमेंट के अंदर मा. आयुक्त साहबने रुल पास किया है। धिस विल बी मॅथालॉजी टू रिकव्हर ओ.एल.टी. अभी तक ओ.एल.टी. टॅक्स वसूल क्यों नही कर पाए क्योंकी आपके पास प्रॉपर मॅथालॉजी नही है। अभी भी यह इन्स्ट्रक्शन चल रहे है। मा. आयुक्त के ऑर्डर से रुल पास नही किया की इस तरीके से कागज आएगा जो प्रॉपर मॅथालॉजी ॲज अ रुल जो चाहता है अपने हिसाब से करता है।

हंसुकुमार पांडे :-

मॅडम ओपन लॅन्ड टॅक्स कितना बाकी है।

**राजेंद्र जैन :-**

टॅक्स के अंदर ऐसा है। आप कम्प्यूटरायझेशन नही किया। उसका मतलब आप समझते हो करप्शन १० करोड बाकी है, ३ करोड बाकी है। आधा लिया आधा छोड दिया तो इतने सारे पेपर निकालके जाँच कैसे होगी। चेक करने के लिए टिप्स नही आती कम्प्यूटरायझेशन जान बूझकर नही किया गया, संगणक जानबुझकर नही रखा गया। आपको कम्प्यूटरायझेशन करना पडेगा टॅली करना पडेगा। स्टॅन्डिंग कमिटी में और एक प्रस्ताव दिया था माना भी गया था वो करते है की हर एरिया के बीट निरिक्षक से आप शपथपत्र लिजीए की मैं मेरी एरिया का २-३ महिने में रि-असेसमेंट करुँगा उसमे कुछ गलती होगी तो उस महिने में करेक्ट करुँगा। अदरव्हाईज इज लायबल टू पनिशमेंट फ्रॉम यू यह मैंने प्रस्ताव रखा था सूचना रखी थी मानी गई थी। देशमुख साहब बोले वो नही मानेंगे बिट निरिक्षक झूट बोलेंगे तो आप इंटरचेज कर सकते है। बट गेट ऑल डेटा विदिन सिक्स मंथ तो आपको शपथपत्र लेके उसके सस्पेंड करो। जब दंडा चलेगा तब वो लोग काम करेंगे। कही पर भी टॅक्स वसूली करने के लिए शासन की सक्ती नही है।

**सुरेश खंडेलवाल :-**

कमिशनर साहब यह जो बात चल रही है की इन्कम सोर्स कैसे बढाया जाए और जो भी मिस्टेक है इन्कम की असेसमेंट की बात चल रही है। बहुत अच्छी बात है लेकिन कमिशनर साहब मैं आपका ध्यान जनता की समस्या जो यथावश कई सालो से और अभी भी ॲटप्रेझेंट मैं बोलते आ रहा हूँ। शायद आपको भी मालूम होगा मैं पहला विषय ले रहा हूँ। शास्ती का कमिशनर साहब शास्ती के विषय में ऐसा है पिछले कई दिनो से २५०-३०० बिल्डींग का शास्ती का कर है। मा. महापौर मॅडम आपको जानकारी होगी इसमें आंदोलन हुए थे और देशमुख साहबने हमको आश्वासन दिया था की, जल्दी मंत्रालय में सचिव स्तर पे मिटींग लगाई जाएगी। उसके अंदर यह निर्णय लिया जाएगा। जल्दी से जल्दी इस बारे में फैसला आएगा। शास्ती के बारे में ४ आदेश पास हुए है। २००८ का महासभा का ठराव अलग है। २००९ में शिवमूर्ती नाईक कमिशनर थे उनका आदेश अलग है। २०११ में अपना आदेश पलट के अलग आदेश दिया। इतने सालो से यह विषय चल रहा है। क्या आप लोगो के जानकारी में है या खाली कलेक्शन करना है वही विषय ध्यान में है। मैं आपसे जानना चाहता हूँ शास्ती के विषय में २५०-३०० बिल्डींग ऐसी है जो पिछले ४-५ साल से टॅक्स नही दे रही है। उसका रिझन सिर्फ इतना है शास्ती के विषय में प्रशासन कोई भी ॲक्टीव्ह भुमिका नही ले रही है। आज

भी उनका टॅक्स बाकी है और यही टॅक्स आऊट स्टँन्डिंग के तौर पे आप के बॅलेन्स शिट में १०.५० करोड १२ करोड हमको यह उदाहरण दिया जाता है की ठाणा में ५० करोड बाकी है। डोंबिवली में २५ करोड बाकी है। वो इतने करोडो में जैसे-जैसे बढता जाएगा शास्ती का विषय जादा पेंडींग और जादा घातक होगा। कमिशनर साहब मैं जानना चाहता हूँ की शास्ती के विषय में कूछ कदम उठाने का प्रयास था आपकी इच्छा शक्ती में है की नही है। यह विषय ऐसा है की इसमें आंदोलन हो गया अभी रोड पे उतरना पडेगा तो भी हम लोग करेंगे। इस विषय में कूछ सिरियस है नही। आप जानकारी दिजीए। किसी की शास्ती का प्रॉब्लेम है किसी का नही है। २५०-३०० बिल्डींग पिछले ३-४ वर्ष से टॅक्स नही भर रहे है।

**राजेंद्र जैन :-**

मा. महापौर मॅडम, खंडेलवाल साहबने जो बोला जो हमने सजेशन दिया है बिट निरिक्षक का शास्ती अशास्ती सब आ जाएगा।

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

मा. आयुक्त साहेब ह्याचा खुलासा करा.

**(सभागृहात गोंधळ)**

**नयना वसाणी :-**

मला मॅडमना एकच प्रश्न विचारायचा आहे की जेव्हा त्यांना एखादा प्रश्न विचारला तर त्या सांगतात मी आत्ताच आले. आत्ताच आले म्हणून त्यांना पाच महिने झाले. त्यांना ज्याही मिटींगला उभे करा त्या बोलतात मी आता आले. तर ते आम्हाला केव्हा अपडेट करुन देतील.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

मैं आपको डिटेल बताता हूँ क्योंकी आपको भी जानकारी नही होगी। २००८ में महासभा का ठराव हुआ था उसमें कहाँ था किसी भी बिल्डींग का कोई भी अनधिकृत भाग होगा उसके उपर शास्ती लगेगी। २००९ में शिवमूर्ती नाईकने आदेश दिया की जिस बिल्डींग को ओसी नही होगी वो पूरी बिल्डींग को शास्ती लगा दो। जब उनको मालूम पडेगा की पब्लिक का विरोध हो रहा है तो २०११ मे उन्होंने और एक आदेश निकाला की जिसको इललिगल पोर्शन है उसको ही शास्ती लगाओ। एक ही कमिशनरने दो आदेश निकाले लेकीन फरक इतना हो गया की २००९ से २०११ तक जो शास्ती लग गई उसको कौन निकालेगा २०११ मे जो आदेश दिया उस मे आज तक शास्ती लग रही है। कोई भी रेक्टीफिकेशन कोई भी जवाब देने के लिए तयार नही है। इसलिए मैं चाहता हूँ इसका पहले खुलासा किजीए।

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौ मॅडम मागच्या सभागृहामध्ये ह्या बद्दल चर्चा झाली होती आणि जो लिगल सेक्शन आहे तो लिगल जो इललिगल आहे तो इललिगल. इललिगल बद्दल समजा एखाद्या माळ्याचे म्हणजे ६ माळ्याची बिल्डींग असेल आणि दोन माळे एखाद्या माणसाने अनधिकृतपणे एक्स्ट्रा बांधले आहेत. तर त्या टाऊन प्लानिंगकडे व्हेरिफिकेशनसाठी ह्या महिन्यात सगळ्या फाईल पाठवल्या आहेत. त्याच्याकडून लिगल इललिगल ठरवून आल्यानंतर इलिगलला शास्ती आणि लिगलची जी काही आकारणी असेल ती आकारणी करण्यात येईल. अशी माहिती घेऊन सांगत आहे.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

बहुत अच्छी बात है आपने आने के बाद इतना ॲक्शन लिया। लेकिन मैं जानना चाहता हूँ जो पुराने २५० बिल्डींग की जो पिछले ४-५ सालसे सर सात माले की बिल्डींग है। बिल्डर ने एक फ्लॅट इललिगल बनाया है लेकिन सबको तिप्पट टॅक्स जा रहा है। आपने अभी अच्छा आदेश दिया की टाऊन प्लानिंग अपने को रिमार्क देगा लेकिन पहले से जो २५० बिल्डींग ४-५ साल से शास्ती का आऊट स्टँन्डिंग बाकी ह। १० करोड रुपये उसका आप क्या डिसीजन लेंगे।

**मा. आयुक्त सो. :-**

ते शासन स्तरावर विचारणा केली आहे. त्याच्याबद्दल शासन स्तरावर निर्णय होणार आहे.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

वही तो मैं बोलना चाहता हूँ होणार आहे पर कब तक?

**मा. आयुक्त सो. :-**

शासन निर्णय लेगा।

**सुहास रकवी :-**

त्यांचा विषय असा आहे की मधल्या काळामध्ये जे लिगल राहत होते त्यांना जे शास्तीची देयक दिली आहेत ते रिफंड देणार की माफ करणार?

**मा. आयुक्त सो. :-**

तो शासन स्तरावर निर्णय झाल्यानंतर .......................

**सुहास रकवी :-**

आपण त्यांना इललिगल तसे दिले आहे.

**राजेंद्र जैन :-**

रिफंड करने का काम होगा निर्णय लिया तो होगा। उसका आज चर्चा करने का मतलब नही है।

**सुहास रकवी :-**

डॉ. साहब रिफंड का बात नही है।

**राजेंद्र जैन :-**

रुल के हिसाब से काम हुआ है।

**(सभागृहात गोंधळ)**

**सुरेश खंडेलवाल :-**

आपने अभी जो आदेश दिया तो सर मैं यह समझू की अभी से आगे फ्यूचर में सर हमने मॅडम को रिक्वेस्ट किया की पूराना जो आऊट स्टँन्डिंग है उसको जब तक शासन का निर्णय नही होता है आप उसको पेंडींग रखो और नए तरह से उनका जो टॅक्स है उसको आप टॅक्स लेते रहो अगर सर कुछ इयर का ५०,०००/- बिल बाकी है करन्ट इयर का १०,०००/- पेमेन्ट है वो आज भी भरने को तयार है। लेकिन उनका कहना यह है की जो पैसा भरा जाएगा उसका इंटरेस्ट और शास्ती में जमा हो जाएगा इसके लिए कोई पैसा भर ही नही रहा है। २५० बिल्डींग के लोग यदि आपको लगता है यह विषय सिरियसनेस नहीं है। आपने बोला ठिक है वह प्रशासन के उपर हो जाएगा सर मैं यह जानना चाहता हूँ प्रशासन का एक टाईम पिरेड दो महिना चार महिना कुछ करने का था उसके हिसाब से हमको आगे क्या ॲक्शन लेने का हो वो मालूम पडे। सर २५० बिल्डींग है १-२ बिल्डींग नही है लोग परेशान है। उनका करन्ट का टॅक्स भी उनसे नही वसूला जा रहा है। मेरे कहने का मतलब आप उनको टॅक्स क्यों छोड रहे हो। मेरी बात सारी सभागृह समझ गया होगा लेकिन फिर भी सर कुछ कह दे तो लोगो को मालूम पडेगा की सच में इस बारे में हम सिरियस है।

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

मा. आयुक्त साहेब शास्तीबद्दल खुलासा करणार की नाही करणार?

**सुरेश खंडेलवाल :-**

लोग बिल नही भर रहे है उनका पानी का लाईन कट करने के लिए अपने लोग वहाँ पे खडे हो जाते है। २५० बिल्डींगवाले ५ सालसे टॅक्स नही भरते तो क्या वो लोग टॅक्स भरना बंद ही रखे आगे क्या करे।

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

ज्या बिल्डींगमध्ये चूकीची शास्ती लावली आहे त्याच्याबद्दल तुमचा निर्णय काय असेल. शासनाचे परिपत्रक वेगळे आहे. आणि तुमची चुकीची शास्ती लागलेली आहे.

**मा. आयुक्त सा‍ो. :-**

महानगरपालिका कधी चुकीची शास्ती लावणार नाही. २००८ मध्ये शासनाने निर्णय घेतलेला आहे. २००८ मध्ये शासनाने ज्या ठिकाणी तिप्पट शास्ती लावण्याबद्दल निर्णय घेतला. तिप्पट शास्ती लावण्याबद्दल जो निर्णय झालेला आहे ते एक पट तुम्हाला टॅक्स भरायचा तिप्पट त्याची आकारणी भरायची आणि ते वर्षानुवर्षे जो पर्यंत अनधिकृत बांधकाम अधिकृत करून घेत नाही तोपर्यंत भरायचे आहे. अशा प्रकारचा तो टॅक्स आहे. आपल्या महानगरपालिकेमध्ये जो प्रलंबित प्रस्ताव आहे तो लवकरच शासनाकडे पाठवण्यात येईल आणि मी स्वतः त्याचा पाठपुरावा करेन मला कमीत कमी २-३ महिन्यांचा टाईम द्या. शासन स्तरावर तो प्रस्ताव पाठवून शासनाकडून निर्णय आल्यानंतर त्यामध्ये कारवाई करण्यात येईल.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

सर आपने जो बोला वह सही है। लेकिन मैं आपको छोटीसी जानकारी दुंगा २००८ मैं आपने कहाँ शासन का निर्णय शासन का निर्णय यह था जो अनधिकृत भाग होगा उसको शास्ती लगेगी। लेकिन अपने यहाँ पे कमिशनर साहबने अपने मन से आदेश दिया की जिस बिल्डींग में ८ माले की बिल्डींग है और उसमें एक फ्लॅट इललिगल है तो पूरी की पूरी ८ माले के बिल्डींग को शास्ती लगा दि है यह शासन का निर्णय नही था। यह निर्णय यहाँ के कमिशनर का था और २००९ के बाद २०११ में उन्होंने वो आदेश वापस भी ले लिया लेकिन जो आदेश २०११ में उन्होंने वापस लिया उसमें उनको यह मेन्शन करना चाहिए था की पिछली २ साल में जो भी शास्ती लगाई गई है उनको भी निकाल दो। लेकिन सर प्रॉब्लेम यह है की आगे एक निकाला दो निकाला तिसरा निकला लेकिन कही भी शासन के आदेश में यह नही है की १०० फुट बांधकाम इललिगल होगा तो उसके लिए २५ हजार फुट के बिल्डींग को शास्ती नही लगेगी। यह चिज आपको स्टडी करनी है। सारे आदेश की कॉपी है जी.आर की कॉपी है। फरक इतना है कोई स्टडी नही हुई है।

**दिपिका अरोरा :-**

खंडेलवालजी आपने बहुत अच्छा विषय निकाला है। जिसको शास्ती लगनी चाहिए थी या जो बिल्डींग टॅक्स नही है। उनको आपने छोड दिया है पर जो सोसायटी जनरली पे कर रही है उनके लिए पानी कट करने के लिए लाईन आ जाती है। मॅडम आप बताइए कितने दिन का नोटिस फर्निश होना चाहिए। तुम्ही त्यांना किती दिवसांचे नोटिस देता.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

मा. आयुक्त साहेब, शास्ती बद्दल जो जी.आर आलेला आहे आणि शिवमुर्ती नाईक साहेबांनी जो निर्णय घेतला आहे त्याच्यामध्ये विसंगत आहे. तुम्ही तो निर्णय आणि शास्तीचा जी.आर बघितला आणि ज्या बिल्डींगला शास्ती लागली आहे ती चूकीची लागलेली आहे तर ती कृपया रद्द करा.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

सर यह इसलिए जरुरी है साहब आपने जो बोला वो बिलकूल गलत बोला २००८ का अनधिकृत बांधकाम का बोला है। यह २००९ में कमिशनर साहबने अपने मन से जो बिल्डर ओ.सी. नही ले रहे थे उनपे

लगाम लगाने के लिए जबरदस्ती गलत आदेश निकाला जिसके वजह से हम लोग भुगत रहे है। आप अभी फिर बोल रहे है शासन के पास जाओ। लो मॅडम है जी.आर के अंदर लिखा है अनधिकृत भाग आप बोल रहे है २००८ में अनधिकृत भाग फिर जो ऑफिशियली भाग को शास्ती लगा रहे है। एक कमिशनर गलत आदेश दे सकता है तो दूसरा कमिशनर आदेश सही कर सकता है। प्रॉब्लेम क्या है इसके लिए गर्व्हमेंट जाऐंगे कोर्ट जाऐंगे।

**मा. आयुक्त सो. :-**

एका आयुक्तांनी काढलेला निर्णय दुसऱ्या आयुक्तांना रद्द करण्याचा अधिकार नाही.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

चूकीचा निर्णय असेल तर.

**मा. आयुक्त सो. :-**

तो चूकीचा ठरवण्याचा आमच्या वरिष्ठ कार्यालयाला अधिकार आहे. मी त्याला स्थगिती देऊ शकतो.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

२००९ मध्ये त्यांनी जो आदेश दिला होता त्यांनी स्वतः २०११ मध्ये त्याची मी तुम्हाला कापी देतो. २००९ मध्ये चूकीचा आदेश दिला होता तोच आदेश २०११ मध्ये परत घेतला. माझा विषय असा आहे दोन वर्षापूर्वी जी शास्ती लावली होती ती का काढत नाही?

**मा. आयुक्त सो. :-**

मा. महापौर महोदया, मा. आयुक्तांच्या खुर्चीवर बसल्यानंतर आयुक्तांनी घेतलेला निर्णय त्या शहरासाठी कोणाचे पर्टीक्यूलर नाव याठिकाणी सभागृहात कृपा करुन घेऊ नये. आयुक्त ह्या नात्याने घेतलेला निर्णय तो चूक असेल किंवा बरोबर असेल चूक असेल तर तुम्ही त्याच्या विरोधात शासनाकडे जायला पाहिजे होते. बरोबर असेल तर त्याची अंमलबजावणी बाकीच्या नागरिकांनी केली तशी करायला पाहिजे होती.

**सुरेश खण्डेलवाल :-**

शहर मे आंदोलन हो रहे है। उनको आश्वासन दिया जा रहा है।

**मा. आयुक्त सो. :-**

एका आयुक्ताचे आदेश दूसरा आयुक्त रद्द करू शकत नाही तुम्हाला आयुक्तांचा निर्णय चूकीचा वाटला तर तुम्ही शासनाकडे मागणी करायला पाहिजे होती.

**सुरेश खंण्डेलवाल :-**

आयुक्त आहे ना. आुयक्तांनी जो स्वताःचा आदेश दिला होता तो परत घेतला.

**मा. आयुक्त सो. :-**

घरचा आणून दिला होता काय? आयुक्तांनी खुर्चीवर बसून घेतलेला निर्णय जर चूकीचा असेल तर तुम्ही शासनाकडे दाद मागायला पाहिजे होता की चूकीचा निर्णय घेतला तर शासनाने त्याला स्थगिती दिली असती.

**भगवती शर्मा :-**

कमिशनर शिवमूर्ती नाईकने २००९ में जो आदेश दिया था उसके बाद २०११ में आदेश दिया वो जो आज आप कह रहे है वही आदेश उन्होने दिया था। लेकिन २०११ के आदेश का पालन आज तक नही हूआ।

**मा. महापौर :-**

भगवतीजी यह विषय खंण्डेलवाल बोल चूके है।

**भगवती शर्मा :-**

इनको समझ मे आना चाहिए।

**मा. महापौर :-**

उनको समझ में आ गया उन्होने जवाब दे दिया है आपको और कोई विषय बोलना है तो बोलो।

**भगवती शर्मा:-**

उसी आयुक्तसाहबने नियम के हिसाब से तिप्पट कर आाकारणी होनी चाहिए उनको उन्होने लिखा था उस आदेश के उपर संबधीत विभाग को आदेश दिया की नगररचना के साथ मिलकर उस तरह की आकारणी की जाए। लेकिन वो आजतक की नही गई। इसी की मागणी खंण्डेलवाल साहब कर रहे है।

**मा. महापौर :-**

भगवतीजी यह लास्ट कब था।

**भगवती शर्मा :-**

२०११

**मा. महापौर :-**

इसके बाद इतने साल में आपने ॲक्शन क्यू नही लिया?

**भगवती शर्मा :-**

लिखीत रूप में बार बार मागणी की गई है। हर बार जैसे आज जबाब दे रहे है विधी विभागाचे सलाह मशवारा करके उसको कम किया जाएगा विधी मॅडमसे भी पूछ लिजीए। उनके पास भी यह मॅटर आया था। उन्होने भी तत्कालीन आयुक्त के पास से मॅटर लेके गए थे लेकिन निर्णय प्रलंबित रहा। इसके लिए आज जो विषय लिया गया है इसका जो निर्णय प्रलंबित है उसका निर्णय लेके लोगो को राहत दि जाए।

**मा. महापौर :-**

वही उन्होंने कहा की १-२ महिने में स्टडी करके वो निर्णय दे रहे है।

**प्रशांत दळवी :-**

मा. महापौर मॅडम आपल्या परवानगीने बोलतो आपण आज जो विषय घेतला त्याबद्दल आपले अभिनंदन करतो. महत्वाचा विषय ह्या ठिकाणी चर्चेला आणला. गेल्या ३ वर्षामध्ये जो विषय चर्चेला येणे गरजेचे होते ते झालेले नाही. त्या गोष्टीचे फार दूःख वाटतें. खण्डेलवालजी बोलले ज्या २५० बिल्डींगचा एक फ्लॅट अनधिकृत आहे. परंतू सर्व इमारतीना शास्ती लागते. नागरिकांचा फार गंभीर प्रश्न होता त्यावेळी जे सत्तेवर होते त्यांनी तो सिरीयसनेस घेतला नाही. ही फार खेदाची गोष्ट आहे. हा विषय ज्यावेळेला ती बॉडी कार्यरत होती ते हा विषय आणू शकत होते आणि सन्मा. आयुक्ताकडे जाऊन भुमिका स्पष्ट करू शकत होते. परंतू नाही नागरिकावर अन्याय झाला. सदस्य म्हणतात एक फ्लॅट अनधिकृत आहे आणि पूर्ण टॉवरच्या टॉवर २५० बिल्डींगला अनधिकृतपणे शास्ती लागते. फार खेदाची गोष्ट आहे. मा. महापौर मॅडम, ह्याच्यापूढे असे होणार नाही. मा. महापौर मॅडम चांगला मुद्दा आहे आणि आपल्या माध्यमातून सोडवावा. परंतु माझे एकच म्हणणे आहे जेथे-जेथे अनधिकृत फ्लॅट निर्माण झाले आहे त्याच्यावर शास्ती लागावी परंतु जे अनधिकृत फ्लॅट नाहीत त्याच्यावर शास्ती लावण्यात येऊ नये असा आपण प्रशासनाला आदेश द्यावा. मा. महापौर मॅडम, दुसरी एक महत्वाची बाब आहे २००८ ला जेव्हा हा ठराव झाला होता त्यावेळेला हा एक ठराव झाला होता की ज्याच्या स्वतंत्र खाजगी शाळा आहेत त्या खाजगी शाळांना ५० टक्के सवलत द्यावी. परंतु आज मला प्रशासनाला विचारायला वाटते की ज्या खाजगी इमारतीमध्ये शाळा आहेत जिथे बिल्डींग आहे जिकडे ग्राऊंड आणि फस्ट फ्लोरला शाळा आहे त्यांनाही सवलत दिली जातात. प्रशासनाने स्पष्ट करावे की सवलती दिल्या गेल्या आहेत की नाही. ह्या जर दिल्या असतील तर कोणाला विचारुन दिल्या गेल्या.

**स्वाती देशपांडे :-**

सन्मा. महापौर मॅडम, माझ्याकडे असे प्रस्ताव आले होते. क्र. १ ची अट मान्य नसल्यामुळे ती प्रकरण वापस पाठवली आहेत. अटीशर्तीची पूर्तता झाली आहे का? अशा प्रकारची तपासणी करुन फेरसादर करावे असा रिमार्क करुन पाठवले आहेत.

**प्रशांत दळवी :-**

मा. महापौर मॅडम, ह्यांनी जो खुलासा केला आहे तो चुकीचा खुलासा आहे. आपल्या ठरावात अशी अट आहे की ज्याची खाजगी शाळा आहे परंतु स्वतंत्र इमारत आहे त्या स्वतंत्र इमारतीला ५० टक्के सवलत दिली आहे. परंतु स्वतंत्र इमारती नाही जिथे ग्राऊंड फ्लोर आणि फस्ट फ्लोरला शाळा भरलेल्या आहेत त्यांनाही आपण ५० टक्के सवलत दिली आहे. प्रशासन जर बोलत नसेल तर पूढच्या वेळी मा आयुक्तांना आणि तुम्हाला तशा शाळेची यादी जाहिर करतो.

**अनिल भोसले :-**

मा. महापौर मॅडम आपल्या परवानगीने बोलतो, मॅडम ह्या शहरामध्ये जी कर आकारणी करतो. जे करापासून वंचित आहे आणि मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे करोडे रुपये नुकसान होते असा किती परिसर टॅक्स मुक्त आहेत, टॅक्स लागला नाही असा आपण सर्व्हे वैगेरे केला आहे का? म्हणजे ह्या परिसरात ह्या लोकांना टॅक्स लागला नाही. कोणी डबल बांधले, कोणी ट्रिपल बांधले. कोणी शाळा बांधेल असा काही स्पेशली सर्व्हे केला आहे का जेणेकरुन भरणारा भरतो तो टॅक्सही भरतो, व्याजही भरतो. काही लोक बिनधास्त आहेत. महानगरपालिकेनी गावोगाव सर्व्हे केला आहे का? एवढे वॉर्ड आहेत त्या एवढ्या-एवढ्या परिसरात टॅक्स लागलेला नाही असा काही सर्व्हे आहे का?

**वंदना चक्रे :-**

मला सुचना करायची आहे की, मिरा भाईंदर शहरामध्ये ३८ झोपडपट्ट्या आहेत. ३८ झोपडपट्ट्यामध्ये किती कर भरुन घेतला आहे. ह्याची माहिति देऊ शकाल का? महत्वाचा विषय आहे सगळ्यात मोठा घोटाळा हाच आहे. मिरा भाईंदरमध्ये ३८ झोपडपट्ट्या आहेत. एक झोपडी वंदना चक्रे घेते, ती भगवती शर्माला विकते, भगवती शर्मा विकतो आसिफ शेखला. आसिफ शेख दिले शर्मा विकतो. आसिफ शेख विकतो आणखी कोणाला? आगेवाला कौन है? हमको मालूम नही असे कितीतरी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचे नुकसान झालेले आहे. ह्याला जबाबदार कोण ह्याची माहिती द्यावी. ३८ झोपडपट्ट्या आहेत. फार गंभीर गोष्ट आहे. त्याची कर वसुल किती वसूली केली आहे आणि किती बाकी आहे आणि कशा पध्दतीने केलेली आहे याची माहित घ्यावी.

**स्वाती देशपांडे :-**

अशा प्रकारचा सर्व्हे झाला आहे की एकूण एक प्रॉपर्टी मालमत्ता कराच्या जाळ्यात आल्या आहेत का सदरच्या बाबतीत काय कारवाई झाली का? आपण महासभेत रिव्हिजन करायचे प्रपोजल दिले आहे. राजेंद्र जैन साहेब बोलले की मागणी रजिस्टर आयुक्त साहेबांनी ठेवले पाहिजे पण तसे नाही ते कर आकारणी रजिस्टर ठेवले पाहिजे. कर आकारणी रजिस्टरमध्ये एकूण एक मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या मालमत्ता आहेत त्याची नोंद घेतली पाहिजे. त्याचा तपशील दिला पाहिजे. त्याचे नाव भोगवटा ह्याची माहिती दिली पाहिजे. त्यावर किती देय टॅक्स आहे ह्याची माहिती असणार आहे कर आकारणी पुस्तकासाठी आपण प्रपोजल तयार केले आहे जे आगामी महासभेत येऊन जाईल.

**अनिल भोसले :-**

त्यामध्ये अनेक अनधिकृत झोपडपट्टया वसलेल्या आहेत. त्यामध्ये अनेक नागरी सुविधा देतो, पाणी देतो, शिक्षण देतो ब-याचशा नागरी सुविधा देतो. त्यामध्ये झोपडपट्टयांची तरतूद आहे का?

**स्वाती देशपांडे :-**

सदरच्या कायद्यात महानगरपालिकेच्या प्रत्येक मालमत्ता ही ह्या कर आकारणी रजिस्टरमध्ये नोंद होणे आवश्यक आहे अशा प्रकारचे नमूद केले आहे.

**वंदना चक्रे :-**

३८ झोपडपट्टयामध्ये किती कर वसूली केली आणि किती बाकी आहे. हा प्रश्न आहे दुसरा प्रश्न असा आहे १,२,३ समजा मी घेतले दुस-याने घेतले, तिस-याने घेतले ते कर भरत नाही त्याच्यावर तुम्ही काय कारवाई केली.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

तत्कालीन मा. आयुक्तांनी घेतलेल्या शास्तीच्या निर्णयांनी काही नागरिकांवर चुकीचा बोजा पडला आहे. त्यामुळे ज्या नागरिकांना २००८ पासुन चुकीची शास्ती लागली आहे ती रद्द करावी व शास्तीची रक्कम रद्द करुन उर्वरीत मालमत्ता कर वसुल करावी असा ठराव मांडत आहे.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

माझे अनुमोदन आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

सन्मा. महापौर महोदया चक्रे मॅडमनी दोन प्रश्न विचारले होते एक झोपडपट्टी एरियातून किती टॅक्स वसूल केला आहे आणि दुसरा प्रश्न होता अनधिकृत हस्तांतरणाच्या बाबतीत एकच झोपडी परस्पर वेगवेगळ्या नावानिशी बिल येत.

**वंदना चक्रे :-**

मॅडम प्रश्न समजून घ्या मी नाव घेऊन उल्लेख केला मला ते महासभेत बरे वाटत नाही. वंदना चक्रे ने विकली भगवती शर्माला, भगवती शर्माने विकली आसिफ शेखला, आसिफ शेखने विकली तुम्हाला हे उदाहरण देते. वंदना चक्रेनी टॅक्स भरला नाही, भगवती शर्मानी टॅक्स भरला नाही, आसिफ शेखनी टॅक्स भरला नाही.

(कॅसेट संपली)

**स्वाती देशपांडे :-**

चक्रे मॅडमनी झोपडपट्टीत किती वसुली केली त्याची माहिती विचारली आहे. सदरची माहिती मी त्यांना उद्या घेऊन देईन.

**वंदना चक्रे :-**

उद्या का? तुम्ही स्टडी करुन आले नाहीत का?

**स्वाती देशपांडे :-**

झोपडपट्टीची माहिती वेगळी संग्रहीत केली नाही. अन्यथा ती घेऊन आली असती.

**वंदना चक्रे :-**

मॅडम तुम्ही काय बोलता तुम्हाला माहित आहे का? माझ्या प्रश्नाचे उत्तर दया.

**मा. महापौर :-**

चक्रे मॅडम वो बोल रहे है कल देंगे तो आप अभी बैठ जाओ।

**वंदना चक्रे :-**

आज लेके आना चाहिए था।

**प्रशांत दळवी :-**

मा. महापौर मॅडम सन्मा. सदस्य ध्रुवकिशोर पाटील यांनी जो ठराव मांडला हा आढावा बैठक आहे तर त्याच्यात ठराव केला जातो का? सचिव साहेब हयांचा खुलासा आपण करा.

**असिफ शेख :-**

प्रकरण क्र. ३ मालमत्ता कर व वसुली बाबत आढावा घेणे. हा विषय आज विषय पत्रिकेवर घेतलेला आहे. बहुतांशी सदस्यांनी आपआपली मते ह्या ठिकाणी व्यक्त केली आहेत.

**मा. महापौर :-**

आसिफजी तुम्ही माझी परमिशन घेतली नाही.

**प्रशांत केळुसकर :-**

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो वसुलीबाबतचा चांगला विषय आहे. आपल्याकडे रेसिडेन्सीयल मध्ये कर्मशियल युज पण होतो. त्याबाबत आपण कारवाई करावी. कारण रेसिडेन्शीयलचा कर्मशियल होत असेल तर त्या कर्मशियलवर निर्गमित केले आणि माहिती काढली तर आपल्याला चांगल्या प्रकारे टॅक्स वसुल होईल. त्याप्रमाणे आपल्याकडे औदयागिक गाळे आहेत जे पुर्वी जी स्ट्रक्चर मध्ये होते आता जी प्लसवन जी प्लस इ. हया स्ट्रक्चर मध्ये झाले आहेत. त्यांना देखिल आपण कर आकारणी केल्यास आपल्या उत्पन्नात मोठा भर पडणार आहे.

**जुबेर इनामदार :-**

सन्मा. महापौर मॅडम, अतिशय चांगला विषय आहे. शहराचा महसुल उत्पन्नाचा विषय. ही चर्चा चांगल्या वातावरणात आणि शिस्तपध्दतीने झाली तर अधिका-यांना उत्तर देण्याची मुभा मिळेल त्याच्यातुन काही तरी चांगला निकाल काढता येईल. आपल्याकडे जी बिलींग सिस्टम आहे. सहा महिण्याची बिल सहा महिने उलटल्यानंतर पुढचे तीन महिने त्याच्यावर कोणतेही व्याज घेतले जात नाही त्याच्यानंतर व्याज आकारले जाते. रोज पध्दतीने अंदाजे १२% व्याज आकारले जाते. मा. आयुक्त महोदय आपले लक्ष केंद्रित करु इच्छितो ते बिल जे आहे १०-१० महिन्याच्या डिसेंबर महिण्यापर्यंत लोकाकडे पोहोचत नाही. सहा महिने झाल्यानंतर ती बिल लोकांपर्यंत पोहोचली पाहिजेत. आपण ते प्रत्येक वर्षी पाठवत होतो आता हयाचा डिव्हिजन केले आणि प्रत्येक ६ महिण्याचा ही बिल पाठवतो हयावर्षी जानेवारी ते फेब्रुवारी पर्यंत लोकांना बिल गेली आहेत. तो व्याजाचा भुर्दंड ह्या शहरातील लोकांनी भरायचा त्याला कारणीभुत कोण? आपले अधिकारी किंवा पालिका प्रशासन हे स्पष्ट आहे. त्याचे कर्तव्य होते. महसुली उत्पन्नाचा भाग म्हणजे वसुली करताना त्याच्यावर किती लक्ष दिले पाहिजे. त्याचा फस्ट प्रायोरिटी देऊन काम केले पाहिजे. जो उत्पन्नाचा भाग आहे ह्या शहराचा महसुल आहे. त्यातुन आपल्या शहराच्या विकासाची कामे होणार आहेत. त्याला डावलुन ह्या प्रकारे कामे केली जात असतात. बिल भरल्यानंतर खतवली जातात ती खतवली गेली नाही म्हणुन दुस-या वर्षी आपली मागणी तितकीच वाढते. आता आपले ६ प्रभाग झाले आहेत आपण जे गणित मोजतो ४ प्रभागाप्रमाणे मालमत्ता कराची मागणी काय आहे त्याच्याप्रमाणे घेतो. साहेब गेल्यावर्षी प्रत्येक प्रभागाला विचारल्यानंतर प्रत्येक प्रभागाकडे ७० ते ८० कोटी अशा प्रकारे मागणी होती म्हणजे एकत्रित केले तर हया शहराची ३०० कोटी मागणी आहे. मोकळया जागेवर कर ९५ कोटी असु शकते, होऊ शकत नाही. ह्याचे कारण आपण कुठे तरी कमी पडतो. रजिस्टर मेन्टेन करणे, ते खतवणे किंवा ते व्यवस्थित सिस्टमाईज करणे हा एक भाग आहे. का केले जात नाही ? ते स्पष्ट होत नाही. लोक बिल भरायला आल्यानंतर सर्वर चालत नाही, कर्मचारी उपलब्ध होत नही. जी सुविधा केंद्रे आहेत तिकडे माणसे पैसे घेऊन आल्यावर पैसे घ्यायची तयारी नाही कारण त्याच्यात १ रु. पाच रु., १० रु. कमी आहेत तर आमच्या कम्प्युटर मध्ये सिस्टम नाही. ते स्विकारणार नाही सॉप्टवेअर, अदयावत टेक्नोलॉजी आजच्या तारखेत देशामध्ये की तुमच्या हातामध्ये मोबाईल आहे त्याचे बटन दाबल्यावर तुम्ही बोलु शकता, सिस्टम आहे तुम्ही पैसे भरु शकता, तुमच्या क्रेडीट कार्ड वरुन पैसे वसुल करण्याची सिस्टम आहे. त्याच्यामध्ये सुधारणा आणायची गरज आहे. शास्तीचा विषय एक तर शास्ती त्याच्यावर बिल पोहोचली नाही म्हणुन व्याज लोकांची समोरुन भरले नाही तर विषय आहे. आपली समोरुन घ्यायची तयारी नसेल तर कसे चालेल. प्रत्येक वर्षी आम्ही सातत्याने पत्रव्यवहार केलेले आहेता की, बँकेमध्ये पैसे भरायची लोकांना संधी का देत नाही. तर दिली जात नाही आपल्या बँकेमध्ये त्यांना दया आम्ही ५ कोटी रु. ची एफ.डी. दिल्यावर तुम्ही आमचे काम केले पाहिजे का. केले जात नाही ? साहेब कमीत कमी ५०% लोक तरी बँकेमध्ये पैसे भरु शकतात जेव्हा पैसे भरायची वेळ येते तेव्हा एक कि.मी. ची रांग लागते. बिल्डींगचे वॉचमन चेक घेऊन येतात ही खरी परिस्थिती आहे. कोण भरायला जात नाही सोसायटीचे लोक चेक घेऊन जातात. वॉचमनला चेक देतात ते चेक घेऊन जातात ठेवतात महिना महिनाभर परतच देत नाही. ज्या लोकांपासुन आपल्याला महसुल उपलब्ध होतो त्या लोकांना आपण रिटन्स सुविधा देतच नाही. पैसा आला की त्या पध्दतीने सुविधा पुरवली पाहिजे. साहेब शास्तीचा विषय ज्यात स्पष्ट अनधिकृत बांधकाम अर्थात तुम्ही त्याचा भोगवटा दाखला दिला नाही. हा विषय सातत्याने सभागृहात चालला तुम्ही आज परत आता या डायसवर आहात हाऊस मधुन बोलले की जितके जास्त बांधकाम झाले आहे त्यावरच शास्ती लागेल हयाची चाचपणी करा की करता येईल कि नाही. कारण हया विषयावर तत्कालिन आयुक्त काकाणी साहेब होते तेव्हा चर्चा झाली आहे. विक्रम कुमार साहेब असताना चर्चा झाली आहे. त्यांना हा निर्णय कधिच घेतला नाही. त्याला बरीच कारणे आहेत. यु.एल.सी.चे फ्लॅट बिल्डरानी यु.एल.सी. चे फ्लॅट दिलेच नाहीत शासनाचा स्वाधीन केले नाहीत त्याच्यामुळे आपण त्यांना ओसी दिली नाही. अशा इमारतीचा शास्ती हटवता येईल का? सभागृहात दिलेल्या प्रत्येक शब्दाला महत्व आहे. शहरवासी आम्हाला प्रश्न विचारतात तुम्ही बोललात हटवतो पण हटवले नाही. म्हणुन आमची तुम्हाला विनंती राहील की हया विषयाची संपुर्ण चाचपणी करुन एक आयुक्त आले त्यांनी एक आदेश काढला जाता जाता ह्यांनी दुसरा काढला काढला. ह्या शहराचे ते मालक होते तुमचे सिनिअर होते. त्यांच्या विषयात काय बोलण्यात अर्थ नाही पण सध्याची जी परिस्थिती आहे. त्याच्यावर एक ठाम निर्णय घेणे गरजेचे आहे. हया सभागृहाने एक निर्णय घेऊन ठराव करुन दिला होता. २/०३/२०१५ ला आम्ही एक ठराव केला होता. ३० तारखे पर्यंत जो इंटरेस्ट लागला आहे तो माफ करा. आणि तुम्ही आपली वसुली करा. हा निर्णय सर्वानुमते ह्या सभागृहाने दिला होता. आणि तो भिवंडी आणि ठाण्याच्या धर्तीवर दिला. भिवंडी आणि ठाणे मनपानी जेव्ही निर्णय घेतला त्याची अंमलबजावणी का करण्यात आली नाही.

**मदन उदितनारायण सिंह :-**

मा. महापौर मॅडम आपले परवानगीने बोल रहा हुँ मा. आयुक्त साहेब अभी तक जो चर्चा हुई आप लोगोने सुना सब लोगोने सुना मिरा भाईंदर महानगर पालिका कर विभाग, कर आकारणी पुरी तरहसे फेल है आप भी इस बात को मानते है। ना तो हम समय पर बिल दे पाते है अगर बिल हमने दिया इस साल जो बिल दिया गया है उसमे से ७५% बिल गलत दिए गए है। अगर गलत बिल भी दिया है, शास्ती भी लगाया है सामनेवाला पैसा लेके आ गया है तो हमारे पास पैसा लेने के लिए सिस्टम नही है। आदमी २-२ घंटे खडा होके चला जाता है। अगर ई-नेट से हम बँकींग से हम पैसा भरते है महानगर पालिका का टॅक्स उसमे हमको एक्स्ट्रा चार्ज देना पडता है। जैसा एम.टी.एन.एल. और रिलायन्स मे नही है। तो यही पे ऐसा क्यु

नही। सुविधा छोड दिजीए सुविधा का पब्लिक सोचेगी नही। हम अपना काम बराबर नही कर रहे है। लोगो को कैसे तकलिप दिया जाता है। आयुक्त साहेब मिरा भाईंदर महानगर पालिका मे हर प्रभाग में मेरे नाम की टॅक्स पावती आती है। कभी भी वो दुसरे के नाम पे जाती है मॅडम ऐसा होता है की नही होता है। मेरे वॉर्ड मे एक पावती मैने खुद रिव्हर्स कराया है। दुसरा मेरे पास पडा हुआ है। अपने नगरसेवक कमलेश भोईर उनके मालमत्ता का ऐसा हुआ है। मेरे पास जो उदाहरण है यह प्रॉपर्टी लालजी गुप्ता के नाम से २५ साल से चली आ रही थी और वो कैलास गुप्ते के नाम पे हो गई। सामने वाला जनवरीसे कम्पलेन्ट कर रहा है। जनवरी से मॅडम के पास आ रहा है मॅडमने हेयरिंग भी लिया। सामने वालेने सब प्रूफ भी दिया फिर भी मॅडम कुछ नही कर पा रही है। अपने प्रभाग अधिकारी दलालो के मार्फत जादा पैसे ले करके दुसरे की मालमत्ता दुसरे के नाम घुमाने का मिरा भाईंदर में धंदा चल रहा है। मॅडम बताईए ऐसा क्यों हो रहा है क्यों नही हो रहा है। और ऐसे कितने प्रकरण मिरा भाईंदर में पेन्डींग है।

**जुबेर इनामदार :-**

एक प्रकरण माझ्याकडे ही आहे. २०१३ मध्ये अर्ज केला होता. २०१५ पर्यंत त्याचे नांव बदलुन देत नाही. आता दिले आठ दिवसा आधी .....................

**स्वाती देशपांडे :-**

सन्मा. महापौर मॅडम मागिल ३-४ वर्षापासुन जी प्रकरण प्रलंबित होते ते बरेचसे मी सॉल्व्ह केलेले आहेत अजुन सॉल्व्ह करणे चालु आहे.

**मदन उदितनारायण सिंग :-**

तुमच्याकडे पुरावे आले की लगेच निर्णय घ्याना त्याला उगाच कशाला रखडवता. कशाला हेअरिंग घ्यायला लावायचे.

**स्वाती देशपांडे :-**

कैलास जी गुप्ताचा जो प्रश्न उपस्थित केला आहे त्यांचे ट्रान्सफर झाल्याचे प्रकरण माझ्याकडे आले होते. त्याची मी रितसर हेयरिंग घेतली आहे. ऑर्डर बाकी आहे २-४ कागद मी जे कर निरिक्षक आहेत त्याच्याकडुन मागवुन व्हेरीफाय करुन डिसीजन देते असे मी आजच सांगितले.

**मदन उदितनारायण सिंग :-**

ठिक आहे मग हे कोणी केले कुठल्या अधिकाऱ्याने केले कुठल्या अधिकाऱ्याच्या स्वाक्षरीने ही मालमत्ता बदली झाली. त्याच्यावर काय कारवाई होणार. ज्या अधिकाऱ्याने केले असेल त्याला बडतर्फ करा. आताच ठराव मांडतो आणि पुढच्या महासभेत मॅडमनी त्याला आदेश दिला त्या अधिकाऱ्याचे नांव आणा आणि त्या अधिकाऱ्याला बडतर्फ करा हे तर एक प्रकरण झाले दुसरे आपल्या चुकामुळे लोकांना किती सतवायचे एखादी दुबार मालमत्ता आपल्या डिपार्टमेन्ट मधुन लावली जाते. त्याच्यासाठी समोरचा माणुस १०-१० वेळा हेलपटा काढतो तरी आपले अधिकारी काही ऐकत नाही. मिरा भाईंदर महानगर पालिका मध्ये काही होऊ शकते हो साहेब तुम्ही नाही म्हणत असाल तर हे काय साहेब नुसते नाही म्हणुच नका, होते झाले आहे. माझी मालमत्ता दुसऱ्याच्या नावावर जाते म्हणजे काय ? आपले अधिकारी आणि कर्मचारी आहेत त्यांनी जनतेला को-ऑपरेट केले पाहिजे. त्यांचा को-ऑपरेट करण्याचा हेतु कधीच नसतो. ते फक्त सतवायला त्रास दयायचा त्याच्या कडुन किती पैसे घ्यायचे प्रयत्न करतात हे थांबले पाहिजे. हे प्रकरण ज्या अधिकाऱ्याने केले असे त्याला बडतर्फ करा.

**मा. महापौर :-**

सदस्य से विनंती है विषय रिपीट नही करें। और दुसरा पर्टीक्युलर केस की डिसकस ना करे इन जनरल यु टेल मी द पॉईन्ट।

**आसिफ शेख :-**

आजचा विषय आपण चर्चेसाठी आणि कर विभागाचा आढावा घेण्यासाठी घेतला. त्या बद्ल मी आपले मनपुर्वक अभिनंदन करतो. मिरा भाईंदरच्या टॅक्स विभागात एवढा सावळा गोंधळ आहे की परमेश्वर जरी खाली आला तरी सुधारु शकत नाही. त्याचे कारण सांगतो नंबर एक कर आकारणी करायची पध्दत काय असते ज्या इमारतीना आपण ओसी दिलेली आहे त्याची एक कॉपी आपण कर निर्धारक संकलका कडे पाठवतो. आणि त्या अनुशंगाने कर आकारणी आपण करतो. ओसी जर घेतली नसेल त्याच्यात पळवाट काढली असेल जर बांधकाम मंजुर नकाशाप्रमाणे असेल तर आपण त्याचा कर अकारणी करतो. काही विकासकर्ते कधी ओसी घेतात कधी घेत नाही. सी.सी. प्रमाणे बांधकाम केले असेल तर कर आकारणी करतो आणि दोन माळे अनधिकृत बांधले तर आपण त्याला शास्ती लावतो.

**प्रभात पाटील :-**

मध्यंतरी शासनाने विषय आणला होता की, जी एस प्रणाली आणायची आणि एल.बी.टी. बंद करायची तेव्हा आमच्या कर्मचाऱ्यामध्ये खुप असंतोष होता की एल.बी.टी. बंद झाल्यावर आमचे पगार कसे होणार ? मालमत्ता कर हा महानगर पालिकेचा मोठा स्त्रोत आहे. एल.बी.टी. साठी त्यांनी रडु नये हा विषय मी इथे एवढयासाठी आणतो की तुम्ही हया मालमत्ता कराचे योग्य नियोजन करुन जर व्यवस्थित वसूली केली ना तर एल.बी.टी. बंद होणार म्हणुन रडण्याची आपल्याला गरजच पडणार नाही. परंतु मालमत्ता कराचे नियोजन व्यवस्थित होत नाही. तुमची बिल वेळेवर होत नाही आणि जात नाही. आणि तुमची बिल गेल्यानंतर वसूली होत नाही. हयासाठी तुम्ही मालमत्ता विभागामध्ये देणारा स्टाफ त्याचे पुर्णपणे नियोजन करा. की त्या स्टाफने

फक्त मालमत्ता करामध्ये वसूलीचेच काम करावे. त्यांना टार्गेट ठरवून दया. आणि जर एखादया व्यक्तीने खुप चांगल्या पध्दतीने काम केले तर त्यांना पुरस्कार सुध्दा दया ही माझी तुम्हाला सुचना आहे. कारण सगळयात महत्वाचा विभाग आहे. तो असेल तर तुमचा टॅक्स आहे. हया शहरामध्ये बांधकामाना किती परवानग्या देतात मला माहित नाही. परंतु ह्या शहरामध्ये दर महिन्याला एक इमारत उभी राहते. त्या बिल्डरचा माणुस तिकडे राहणारे लोक आपल्याकडे फे-या मारतात की आम्हाला टॅक्स लावून दया. मला सांगा टॅक्स लावायची किती प्रकरण पेन्डींग असतील. लोक फे-या मारुन सुध्दा इकडे टॅक्स लागला जात नाही. किती लोक नगरसेवकाकडे येतात की आम्हाला टॅक्स लावून दया. त्यातिथे पाण्याचे कनेक्शन जाते, लाईटचे कनेक्शन जाते. परंतु आपली आकारणी होत नाही. मदन सिंगने जे उदा. सांगितले मला सांगायला अतिशय वाईट वाटते मॅडमांना प्रकरण माहित आहे. मिरारोड मध्ये माझी प्रॉपर्टी त्या बिल्डरच्या नावाने झाली. ती का झाली कशी झाली कोणी केली ह्याचा शोध कोणी घ्यायचा नाही संबंधितांना जो पर्यंत शिक्षा होत नाही तो पर्यंत हे प्रकरण मॅडमना माहित आहे. त्याच्यापुढे जाऊन सांगतो घ्या सगळयाचे नियोजन करायचे असेल तर संगणक प्रणालीचा वापर करा कर्मचा-यांवर डिपेंड राहु नका संपुर्ण संगणकीकरण करुन टाका. जोपर्यंत तुमच्यात सुसुत्रता आणि प्रणाली राबवत नाही तो पर्यंत हे सगळे होणार नाही ह्या प्रकरणामध्ये जर तुम्हाला सुसुत्रता आणायची असेल तर होणारी प्रॉपर्टी कुठे होऊ दे कोणी आल्यानंतर त्यांना टॅक्स लावा. तो येणारा पैसा तुमच्यासाठी येतो ह्या पालिकेसाठी येतो. त्यांना फे-या मारायला लाऊ नका तुमच्या काऊन्टर वर सकाळी नऊ पासुन लाईन लागते. आपले कर्मचारी ११.०० वाजता पावत्या फाडायला सुरुवात करतात. हा माझा आरोप आहे. तुम्ही सकाळी येऊन बघा तुमचे सर्व्हर डाऊन असतात तुमचे कर्मचारी वेळेवर येत नाही. लोक ताटकळत उभे असतात त्याची तुम्ही दखल घेतली पाहिजे. तरच तुमचा मालमत्ता विभाग ॲक्टीव्हेट होईल.

**निलम ढवण :-**

मा. महापौर मॅडम मदन सिंग ह्यांनी जो प्रकार सांगितला त्याच्यात एक ॲडीशनल प्रकार असा आहे की जर एखादया प्रभागामध्ये एखादी वास्तु किंवा बिल्डींग असेल तर त्या प्रभागामध्ये त्या इमारतीला टॅक्स न लावता दुस-या प्रभागातील काही अधिकारी त्यांना टॅक्सची पावती लाऊन देतात ते कुठेही रेकॉर्डला मेन्शन नाही आहे. असा कोणताही टॅक्स प्रभाग कार्यालयात नाही. अशा पध्दतीने कारभार चाललेले आहेत तर अशा अधिका-यावर कारवाई करा तरच बाकीचे सरळ रस्त्याने चालतील.

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

कोऑर्डिनेशन बिटवीन द टॅक्स डिपार्टमेंट ॲन्ड कम्प्युटर डिपार्टमेंट. हे दोन्ही ऑफीसर आहेतच टॅक्स डिपार्टमेंट आणि कम्प्यूटर डिपार्टमेंट. ह्या दोघांचे अजिबात को-ऑर्डिनेशन नाही आहे. वरुन फाईल खाली जाते आणि खालून ती फाईल होत नाही. लिगरिंग ॲन्ड डिसीजन टेकींग इज व्हेरी स्लो. मॅडमकडे फाईल पेन्डींग असते परंतु डिसीजन इमीजेएटली घेत नाही. जो क्लेरिकल स्टाफ आहे तो पण अतिशय सूस्त आहे. तो अजिबात लक्ष देत नाही. माझ्याकडे पूरावे आहेत पण मॅडमनी सांगितले आहे की कोणतेही इन्डीव्ह्यूज्वल पूरावे आपण देऊ नका, म्हणून देत नाही. साहेब लोक सांगतात आमची कर आकारणी झालेली आहे. आम्हाला टॅक्सची बिल द्या. परंतु अजून इश्यू झालेले नाहीत ही उदाहरण आहेत.

**रशिदा काझी :-**

मैं मॅडम को फॉलोअप कर रही हूँ। अस्मिता ऑर्चिड बिल्डींग के अंदर ५६ फ्लॅट में २०११ सबका टॅक्स भरा उनका रसिद आया खाली एक का नही आया। २०११ से वो फॉलोअप कर रहा है। मैं एक नगरसेविका रहके उनका फॉलोअप कर रही हूँ। लेकिन आप सोचो कॉमन आदमी आता है तो उनको कितना दौडधूप कराते है। उनके लिए कोई सुविधा नही है। प्रभाग ५ में ४ कम्प्यूटर है। १० हजार लोग वहाँ पे टॅक्स भरते है उधर लोगो के लिए कोई सुविधा नही है। पैसा भरने लोग आते है उनको कोई सुविधा नही सिनियर सिटीझन को कोई सुविधा नही। आज मैं छह महिने से दौड धूप कर रही हूँ, लेकिन वो एक आदमी का भरा हुआ रसिद नही मिल रहा है, और उसपे आप इंटरेस्ट पे इंटरेस्ट मारके दे रहे हो। हर दोन दिन से मैं आपको फोन करती हूँ।

**दिपीका अरोरा :-**

मा. महापौर मॅडम, प्रॉपर्टी टॅक्स अगर ८० टक्के नही भरती है तो ऐसी पॉलिसी है की उनका पानी कट कर दिया जाए। अगर २३ या २८ में से एक फ्लॅट २-३ साल के लिए प्रॉपर्टी टॅक्स नही भरता है विदाऊट नोटिस ७ डेज का इन्होंने फर्निश करना चाहिए। दो दिन के नोटिस में पानी कट करके चले जाते है। उसके बाद सोसायटी वालो को १००० रुपये रेस्टोर करने के लिए मिटर देना पडता है। इज इट फेयर दो दिन का नोटिस मैं आपको पूरा प्रुफ के साथ बता सकती हूँ। धीस इज हॅपनींग थ्री सोसायटी इन द प्रभाग. पॉलिसी बनाके के समय आप यह देखे की पर्सनल फ्लॅट का पानी कट करे या सोसायटी का करे।

**शिल्पा भावसार :-**

मा. महापौरांच्या परवानगीने, मा. आयुक्त साहेब मी आपणांस सांगू इच्छितो मी आपल्या पालिकेत सगळ्यांचे ऐकले आहे त्या सगळ्यांचे म्हणणे बरोबर आहे. ते आपल्याला पाहिजे आणि आपण करुन घेणार एक नोंद करुन घ्या की आपले टॅक्स डिपार्टमेंट जे कर्मचारी आहेत ते दुस-या डिपार्टमेंट मधून ट्रान्सफर झालेले आहेत ते अशिक्षित आहेत त्यांना टॅक्समध्ये कसे काम करायचे त्याची जाणीव नाही. म्हणून ते इकडे तिकडे गोंधळ करतात आणि लोकांची फाईल हरवली गेली असते आम्ही नगरसेवकांना फाईल आणलेली असते

ती हरवतात मग एक काम आम्हाला ३-३ वेळा एन्ट्री करायला लागते. ह्याच्याकडे काहीच रेकॉर्ड नाही आहे. कुठली फाईल कुठल्या डिपार्टमेंटमध्ये जाते ते त्यांना माहित नाही. तर तुम्ही ते करुन घ्या.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

मा. महापौर मॅडम, आपके जितने भी विषय है मैंने पहले एक शास्ती का विषय लिया। यह दुसरा विषय इसलिए सबूत के साथ दे रहा हूँ क्योंकी हमारे श्री. हंसुकुमार पांडेने विषय लिया था ओपन लॅन्ड टॅक्स आप बात कर रहे है ना मैं आपको बताना चाहूँगा एक सोसायटीको पानी के इंटरनल कनेक्शन के लिए ॲप्लीकेशन डाला उनको प्रेशर नही आता था। पहले फाईल गई टॅक्स डिपार्टमेंट मुझे यह बताया गया जितने भी बिल्डींग के फ्लॅट ओनर है उनके टॅक्स भरो उसके बाद में पानी की फाईल आगे जाएगी। कमसे कम दो महिने में मैंने फॉलो करके हर व्यक्ति का मैंने टॅक्स भरवाया। उसके बाद में गया तो मुझे बताया गया की आपके सोसायटी का ओपन लॅन्ड टॅक्स बाकी है। मैंने कहाँ मॅडम ओपन लॅन्ड टॅक्स सोसायटी का नही होता है बिल्डर का होता है। ३५ लाख का ड्यूज निकालके सोसायटी को भेज दिया। सोसायटीवालो को अटॅक और चक्कर नही आया मैंने जाके देखा पूरा इन्क्वायरी किया तो सिर्फ एक साल का ३.५० लाख रुपये बिल्डर का ओपन लॅन्ड टॅक्स बाकी था। सर हमारे यहा इतना घालमेल है मैं आपको बताना चाहूँगा। कोई भी बिल्डींग की जब सी.सी. देते है तो सी.सी. देने के बाद उसका एक कॉपी टॅक्स डिपार्टमेंट को देना अनिवार्य है। लेकिन हमारे यहाँ आज तक टाऊन प्लानिंग में इतने दिन हो गए टाऊन प्लानिंग डिपार्टमेंट में एक भी सी.सी. की कॉपी ओपन लॅन्ड टॅक्स लगाने के लिए नही दी। उसके बाद में यह होता है सोसायटीवाले आ जाते है और उनको ओपन लॅन्ड टॅक्स के बिल ३५ लाख के भेजे जा रहे है। सर यह एकही केस है पर आप इन्क्वायरी बिठाऐंगे। मैंने लास्ट टाईम काकाणी साहब जब आए थे उनको मैंने बहुत सारे केस दिए थे की बिल्डर ने ऑक्युपेशन सर्टिफिकेट लिया है। लेकिन एम.बी.एम.सी. को आपेन लॅन्ड टॅक्स नही दिया है जब की ओपन लॅन्ड टॅक्स के बिना ओ.सी. देना नही चाहिए था। ऐसे केसेस के उपर मेरी आपसे विनती है आप इसके उपर इन्क्वायरी बिठाए और महानगरपालिका का नुकसान हुआ है यह पैसा भरेगा कौन सोसायटी सात साल से बिल्डर छोड के जा चूका है। अभी इसका ३.५० लाख, ३५ लाख कौन भरेगा। ऐसे केसेस आपके पास आएगे जो आप क्या डिसीजन लेगे। जिन्होंने महानगरपालिका का नुकसान यह तो एक ही केस है। अभी जुबेर भाई ने बोला ९५ करोड रुपये ओपन लॅन्ड टॅक्स बाकी है। मैं आपको सच बताऊ तो ९ करोड भी नही होगा। यह बजेट फुगा-फगाके १०० करोड आऊट स्टॅन्डिंग आप दिखा रहे है। मुझे बताइए की भविष्य में क्या होनेवाला है इसमें आपकी क्या भुमिका रहेगी।

**स्वाती देशपांडे :-**

सदरची ३५ लाखाची रक्कम ही संपूर्ण सर्व्हे नंबरसाठी प्रस्तावित केलेली आहे.

**मा. आयुक्त सो. :-**

३५ लाख रुपये संबंधित सर्व्हे नंबरसाठी केलेले आहे. म्हणून तुम्हाला सांगितले संबंधित बिल्डरला ३.५० लाख रुपये अमाऊंट आलेली हे आपण स्वतः कबूल केले.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

मॅडमने मेरे से पूछा है खंडेलवालजी यह पूर लेआऊट का है की सिंगल बिल्डींगका है। मैं मॅडम आपको खूलासा कर चूका हूँ की यह पूरे सिंगल बिल्डींग का है। फरक इतना है की बिल्डींग को ओ.सी. आ गई है। २०१० में टॅक्स लग गया है। लेकिन आज तक आप ओपन लॅन्ड टॅक्स लगा रहे हो यह आपके प्रशासन की गलती है। जब ओ.सी. आ चूकी है सब कूछ हो चूका है तो आप उसको ओपन लॅन्ड टॅक्स क्यों लगा रहे हो।

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. महापौर मॅडम, सर्व्हे नंबर आहे ती सुधारणा करुन घ्यावी.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

यह बिल्डरने जो ओपन लॅन्ड टॅक्स नही भरा है २००९-२०१० का इस बात को ५ साल हो गया सोसायटी को आपने जो नोटिस दिया है। तो उस समय ओ.सी. के पहले आपको लेना चाहिए था। आपने बिल्डर से नही लिया तो सोसायटी उसको क्यों भरेगी।

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. महापौर मॅडम, आपले मनपूर्वक अभिनंदन करतो की चांगला विषय चर्चेला आणला.

**सुरेश खंडेलवाल :-**

यह जनता का प्रश्न है मैं जवाब चाहता हूँ। आप बात को काट रहे है। यह गलत है क्या?

**नरेंद्र मेहता :-**

आपके विषय को समर्थन कर रहा हूँ।

**सुरेश खंडेलवाल :-**

टाऊन प्लानिंग डिपार्टमेंट ने डेव्हलपर का फायदा करने के लिए ओ.सी. दे दिया। अब सोसायटी को ओपन लॅन्ड टॅक्ससे बिल भेजे जा रहे है। क्या सह सही है क्या? और इसको भरेगा कौन?

**मा. महापौर :-**

आपके बात से हम सब समर्थन है।

**सुरेश खंडेलवाल :-**

तो बोलिए की सोसायटी को नही भरना है इसके डेव्हलपर से भरेंगे।

**मा. महापौर :-**

यह बोलने के लिए उनको रेकॉर्ड देखने का टाईम तो दिजीए।

**मा. आयुक्त सो. :-**

अशा जेवढ्या बिल्डींग आहेत त्याचे व्हेरिफिकेशन करायला टाऊन प्लानिंगला प्रस्ताव दिलेला आहे. त्याच्यावर शहानिशा करुन तो सर्व्हे नंबरचा टॅक्स आहे की एका बिल्डींगचा टॅक्स आहे त्याच्यावर शहानिशा करुन कारवाई करण्यात येईल.

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. महापौर मॅडम, टॅक्सचे विषय अनेकदा सभागृहात येतात आणि त्यांच्यावर गंभीर चर्चा होते. प्रत्येक सदस्याची भावना असते की ज्या काही चूका झाल्या आहेत शेवटी नागरिकासमोर लोक प्रतिनिधीना जावे लागते. ह्यासाठी आपण विशेष सभा बोलावली त्यासाठी आपले मनःपूर्वक अभिनंदन करतो. सर्व प्रथम आम्ही भारतीय जनता पार्टीचे सर्व नगरसेवक आपले एक महिन्याचे मानधन नेपाळ सरकारला आमच्या तर्फे ज्या भागात भूकंप आला आणि अनेक लोक मृत्यू पावले तिकडच्या मुख्य ह्यांना आमच्या तर्फे सचिवाकडून एक महिन्याचे सर्व एकत्रित करून मा. महापौराच्या हस्ते नेपाळला पोहोचवण्यात यावे. मला मानधन नाही मी नाकारलेले आहे. आमदार झाल्यानंतर आपल्याला पत्र दिले की मी मानधन घेणार नाही. पण तेवढी रक्कम मी व्यक्तिगत त्यामध्ये समावेश करेन ती त्यामध्ये द्यावी. मागच्या मिटींगमध्ये ठराव झाला होता की अधिकाऱ्यांना बसण्यासाठी व्यवस्था बाहेर करावी सभागृहामध्ये मा. महापौराच्या मागे बसणे हे शोभत नाही. पुढच्या सभेत पालन करावे ही विनंती. आजचा जो विषय होता मिरा भाईदर महानगरपालिकेचे आर्थिक नुकसान होते. नागरिकांवरही अन्याय होतो आणि वसूली बरोबर होत नाही म्हणून विकासाची कामे रखडली जातात वेळोवेळी कर आकारणी केली जात नाही. ओपन लॅन्ड टॅक्स लागला जात नाही. जो येतो त्याला सगळे कायदा जो येत नाही त्याला सर्व माफ ह्या शहरामध्ये अनेक वास्तू अशा आहेत ज्याला अजून कर आकारणी झालेली नाही. मिरा भाईदर महानगरपालिकेमध्ये आपण कर आकारणीचे सांगितले की आमच्या कडे डबल बिल आहेत त्यासाठी ही रक्कम आहे. आपण सांगितले की ६५ मधले ४८ कोटी वसूल केलेले आहेत तर आपले हे म्हणणे आहे का की २२ कोटी ह्या वर्षाचे पेन्डीग आहेत.

**स्वाती देशपांडे :-**

मागील आणि चालू दोन्ही.

**नरेंद्र मेहता :-**

चालू किती डिमांड होती.

**स्वाती देशपांडे :-**

चालू ३७ कोटी होती.

**नरेंद्र मेहता :-**

तुम्ही ४८ ओव्हर ऑल वसूल केले ना.

**स्वाती देशपांडे :-**

घरपट्टी ,सामान्य कर.

**नरेंद्र मेहता :-**

किती डिमांड होती.

**स्वाती देशपांडे :-**

घरपट्टीमध्ये मागील १८ कोटी ७२ लाख.

**नरेंद्र मेहता :-**

डिमांड किती आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

६५ कोटी ७१ लाख.

**नरेंद्र मेहता :-**

त्यामध्ये ४८ कोटी आपण वसूल केले आता १७ कोटी जी तूट आहे त्याचे काय म्हणणे आहे. डबल एन्ट्रीला किती रक्कम आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

९ कोटी आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

मा. आयुक्त महोदय ९ कोटी ही रक्कम आहे ती गेल्या अनेक वर्षापासून म्हणजे ही गाडी चालू झाली असेल ५० लाखाला मग ५० लाखाचे व्याज आमचे डबल एन्ट्रीचे प्रमाण खूप कमी आहे. म्हणजे प्रमोद सामंतला जे उत्तर दिले ते डबल एन्ट्री आहे. रक्कम खरोखर खूप कमी आहे. म्हणजे ॲक्चूअल एक कोटीच असतात इकडे अनेक वर्षापासून आपल्याला ९ कोटी दिसतात त्याच्यावर अनेक वर्षापासून व्याज आहें. आणि ६५ कोटी फ्रेश डिमांड आहे. ते आम्ही २७ कोटी धरून केलेले नाही आहे. मा. आयुक्त महोदय, मागच्या वेळेला पण १०० टक्के वसूली झाली नव्हती. उदा. मी माझेच बिल ह्यावर्षी डबल भरले म्हणजे ६५ कोटी ओरीजनल आणि प्लस जुने काय असेल ते जसे आता ४८ कोटी आले १७ कोटी बाकी आहे पूढच्या वर्षी येणार आहे ना.

तिकडे १० रुपये डिमांड आहे. ९ आले म्हणजे झाले. पूढच्या वर्षी १० बाकी आहे ती अ‍ॅड होईल ना. पण आपण तसे करत नाही. डिमांड कुठे जाते नक्की माहित नाही. टॅक्ससाठी विश्लेषण करणे आवश्यक आहे की नक्की ही रक्कम जाते कुठे दरवेळी आपण बोलतो ९० टक्के झाले तर ते १० टक्के गेल्या १० वर्षाने काढले तर १०० टक्के अजून बाकी आहेत. त्याचे म्हणणे आमच्याकडे रक्कमच बाकी नाही. ९ कोटी डबल एन्ट्री ओरिजनल किती डिमांडमधून बाकी आहे. बजेटला प्रोव्हिजन ६५ होती ना. डिमांड कितीची आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

टोटल ६५ कोटीची डिमांड ठेवली आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

६५ कोटी बजेट प्रोव्हिजन आहे की डिमांड आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

बजेट प्रोव्हिजन आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

डिमांड कितीची आहे बिल नक्की किती बाहेर काढली आहेत ते ७० कोटी आहेत की ५० कोटी आहे.

**स्वाती देशपांडे :-**

९१ कोटीची आहे.

**नरेंद्र मेहता :-**

९१ कोटीचे ४८ कोटी वसूल केले आहेत. किती पैसे बाकी आहेत.

**मा. आयुक्त सो. :-**

५० टक्के बाकी आहेत.

**नरेंद्र मेहता :-**

दाखवताना काय बोलतो ८० टक्के गेले, ९० टक्के गेले ज्यावेळी मी बजेटला बसलो त्यावेळी बोललो मागचे कुठे आहेत. ठीक आहे ह्यावेळी ४८ नाही केली आता ज्यावेळी मी बजेटला प्रोव्हिजन केली ६५ होती ह्यावेळी कदाचित ८० केली तर ४८ आणि ८० मला १२८ पाहिजे. १२८ मधून ९० टक्के वसूल करा किंवा ८० टक्के वसूल करा. ह्याच्यावर कोणी लक्ष देत नाही आम्ही डिमांड मधून ९० केले विषय संपला आणि ६ महिन्यानंतर काय होणार हे नगरसेवक सर्व आपल्याकडे कामाला येणार आपण बोलणार आमच्याकडे बजेटमध्ये तरतूद नाही. पैसे संपलेले आहेत ही आपली एकमेव भाषा आहे. प्रभात ताईंनी सांगितले की एल.बी.टी. जाणार आहे. शासन नक्की काय निर्णय घेणार माहित नाही. ५० टक्के देणार, १०० टक्के देणार कदाचित १०० टक्के देतील पाच वर्षानंतर कॅन्सल करतील. आपल्याला माहित नाही. सर्वात मोठा आधारस्तंभ टॅक्स आणि कर आकारणीत राहणार आहे. ह्या शहराच्या विकासासाठी ह्याला आपण एकदम इजी घेतलेले आहे. आजपर्यंत ह्याला कोणी गंभीर घेतलेच नाही. खाली वापरायला पाहिजे बजेट फुगवा पैसे तरतूद करा. अधिकाऱ्यांनी वसूल करा नाही वसूल करा काय माहितच नाही. प्रभाग अधिकाऱ्यांना स्वतःला माहित नसते की त्याच्याकडे किती डिमांड होती आणि किती डिमांड बाकी आहे. बॅकलॉग किती आहे तो कोणाकडे होमवर्क नाही. एखादा छोटा दुकानदार असतो ना किराणावाला त्याच्याकडे ३००-४०० खाती असतात त्यांना शेवटच्या वर्षी माहित असते की ह्या व्यक्तिचे एवढे पैसे बाकी आहे. आपल्याकडे एवढी मोठी यंत्रणा आहे करोडो रुपये आपण खर्च करतो तरी आपण त्या वसूलीला पोहोचू शकत नाही. असे कामकाज चालवायचे का? ९० टक्के आले आम्ही खूश संपला विषय ६५ झाला पूढच्या वर्षी ७० तरतूद करा. नक्की किती तरतूद करायला पाहिजे १५० की ५०. मा. महापौर मॅडम, दरवेळी विरोधी पक्षनेता भुमिका असते बजेट फुगवले गेले आहे. आता फुगवले त्याचे डेफिनेशन काय? आम्ही तर ७० ते ८० कोटीची तरतूद केली आहे. पण ह्याच्या म्हणण्याप्रमाणे ९१ जूने होते ४८ बाकी आहेत १२५ असायला पाहिजे. म्हणजे नक्की आम्ही १२५ करायला पाहिजे की तुमचे होत नाही म्हणून ५० करायला पाहिजे. ही फिगर आजपर्यंत प्रशासनाकडे नाही ३१ मार्चला जसे खर्चाबरोबर देतो एवढा खर्च झाला एवढे आम्हाला लागणार आहेत पण वसूली बाबतची गॅरेन्टेड फिगर कोणाकडेच नसतात की एवढी वसूली केली आहे एवढी करायची आहे. दरवर्षी ह्या मिरा भाईंदरमध्ये २५ ते ३० कोटी दरवर्षी नुकसान करतो. मी उदाहरण सांगतो मागच्या वेळी ठाकूर मॉलला मागच्या वेळेला कर आकारणी केली सगळे मेजर प्रॉपर्टी रेन्टल आहेत २००५-०६ ला जेव्हा बांधून जे अ‍ॅग्रीमेंट दिले त्याच रेटवर अजून चालू आहे ना तो रेट आणि आजच्या रेटमध्ये १० पट फरक आला. ज्यावेळी १ कोटी भाडे असेल तर त्या मॉलचे ५० लाख टॅक्स आज १० कोटी भाडे आले तर ५ कोटी टॅक्स यायला पाहिजे. हे कोणी बघत नाही. मेजर प्रॉपर्टी रेसिडेन्शीयलचे कर्मशियल झाले. त्यांनी कर आकारणी करायला नको का? नगरसेवक असू द्या, आमदार असू द्या. आपण व्याज लावायला कोणाला सोडता का? आम्ही भरले नाही तर हा व्याज तो दंड सगळे काही लावून टाकता आणि जे भरतच नाही त्यांना सगळी माफी ह्या नुकसानाला जबाबदार कोण? मा. आयुक्त साहेब हे आर्थिक नुकसान आहे. बाकी बाबीमध्ये ठीक आहे. एखादा तुम्ही माफ करा ह्या आर्थिक नुकसानात तो व्यक्तिगत जबाबदार नाही का? एखाद्या वेळी एक विट ठेवली जाते तेव्हा अतिक्रमण विभागाला माहित पडते की इथे अतिक्रमण होते आणि इमारतींच्या इमारती उभ्या राहतात तेव्हा त्याला माहित पडत नाही का की, आपल्याला कर आकारणी करायची आहे. त्यावेळी कोणी लक्ष देत नाही की आम्ही जाऊन कर आकारणी करायला पाहिजे. अनेकदा तक्रारी येतात सन्मा. सदस्य खंडेलवालजीनी जो प्रश्न मांडला तो का आला कारण तुम्हाला माहितच नव्हते की मागचे अनेक टॅक्स बाकी आहेत. नाहीतर तुम्ही असेसमेंट करताना बिल्डरला

बोलला असता की पहिले हे पैसे भर मग आम्ही असेसमेंट करतो. आता पैसे कोणी भरायचे. आपण टेक्नीकल विचार केला तो आम्ही प्रॉपर्टीवर लावला आहे. म्हणजे प्रॉपर्टी वाल्यांनी भरायचा मग तो नरेंद्र मेहता असू द्या, आयुक्त साहेब असू द्या की महापौर मॅडम असू द्या. हा मोठा प्रश्न चिन्ह निर्माण झाला आहे. अशी एक सोसायटी नाही माझ्या माहितीप्रमाणे २००८ पासून ओपन लॅन्ड टॅक्स लावा. साहेब २००८ नंतर आम्ही तुम्हाला गॅरेन्टेड सांगतो अनेक लोकांनी अनेक पूरावे सादर केले २००८ नंतर ज्या-ज्या वेळी असेसमेंट झाले त्या सर्वांनी एन.ए भरले की नाही भरले अधिका-यांनी काय संगनमताने बिल्डरच्या सांगण्यावरुन टॅक्स लावून मोकळे झाले. कोणालाही सांगितले नाही की हे भरा. विक्रम कुमार साहेब आल्यानंतर त्यांनी आगावू टॅक्स घ्यायला सुरुवात केली. आता जसे सांगितले की सी.सी. ची कॉपी द्यायला पाहिजे. आता आपल्याकडे चांगले सिस्टम आहे की टाऊन प्लानिंग पहिलेच बोलतात की तुम्ही पहिला ओपन लॅन्ड टॅक्स भरुन या. परंतु एक वर्षाचाच भरतो. पुढील डिमांड आपली वेळेवर जात नाही. ह्या वेळेला अनेक लोकांना बिल आली की हे तुमचे ३० लाख बाकी आहेत कोणाचे ६० लाख बाकी आहेत. आम्ही विचार करतो बजेटला तरतूदच आम्ही कमी केली आहे. एवढे पैसे बाकी आहेत तर आजही त्याच्याकडे फिगरच नाही. ३५ लाख एका सोसायटीचे आहेत मग अशा किती सोसायट्या आहेत. मा. आयुक्त महोदय २००८ पासून जरी कायदा आला असेल २००५ ला काम चालू केले असेल आणि आतापर्यंत त्याचे काम चालू असेल त्याला तोपण ह्याच्या अंडर येतो त्याने आजपर्यंत एनएची कर आकारणी केलीच नाही. एखाद्या व्यक्तीने २००७ ला सी.सी. घेतली. २००८ ला बांधकाम सुरु केले आजही बांधकाम सुरु आहे. पण तो एन.ए खाली आलाच नाही ना. कारण त्याने परवानगी २००८ नंतर घेतली त्याला माफ झाले ना. आणि कोणत्या तरी अधिका-याला हाताशी घेऊन कर आकारणी करुन मोकळा तुम्ही शेवटी काय बघणार ह्यांचे नाव आहेत का? नाही आहे. असेसमेंट करा मोकळे तुम्ही विचारणार पण नाही की, कधीची सी.सी. आहे. कधी काम पूर्ण झाले. देशमुख साहेबांकडे चार्ज आहे त्यांनी पण बघितले तर त्यांना पण वाटले असेल खरोखर आपण मेहनत घेतली तर १०० कोटी पर्यंत आपण टॅक्स वसूली करु शकतो. साहेब इंडस्ट्रीयलच्या एक-एक गाळ्याचा रेव्हेन्यू १०,०००, २०,०००, ३०,०००, ४०,००० त्याचे वरचे अनधिकृतपणे काम केले तर ३० खालचे तर ३० वर चे पण लागले पाहिजेत. जसे आता सांगितले एखाद्या बिल्डींगवाल्याने स्टील काय केले तर अख्या बिल्डींगला तुम्ही शास्ती खाली आणले. पण बाकीचे लोक बिनधास्त आहेत त्याने ग्राऊंडचे वन केले वनचे दोन केले आणि त्या मोठ्या प्रमाणात एका गाळा मालकाचे साधारण १ लाख रुपये नुकसान होत असेल कारण शास्ती लागेल तो त्या वेळेला लिगल असेल आता अनधिकृत खाली आला म्हणून त्याला शास्ती लावून तीनपट टॅक्स हा म्हणजे १-१ लाखपेक्षा एक-एक गाळ्याला कमी टॅक्स होऊ शकत नाही. आज आपण १०,०००, २०,००० घेतो त्याला आपण शास्ती खाली आणले नाही. एखाद्याचे १०० रुपये बाकी असेल तर त्याचा नळ काप ह्याचे घर सिल कर, ह्याला नोटिस द्या, ह्याला दम द्या.

**वंदना चक्रे :-**

मा. महापौर मॅडम, हे किती वेळ चालणार आहे. मा. महापौर बोलल्या की, रिपीट करु नका.

**नरेंद्र मेहता :-**

ठराव आम्हीच मांडणार आहेत. आम्ही विषय सोडून व्यक्तिगत ह्याचा टॅक्स लागला नाही त्याचे बिल चूकीचे आहे असे मी भाषण करत नाही. ह्या शहराला आम्ही गांर्भियाने बघितले ते आम्ही भाषण करतो. मध्येच आपण सांगितले २००८ ला निर्णय झाला, २००९ ला निर्णय झाला अंमलबजावणी होत नाही. अंमलबजावणी आम्ही करु. आमच्या सत्तेत ताकद आहे ना. भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना, बहुजन विकास आघाडी करणार ना. लोकांना न्याय देणार ज्यांना शास्ती लागलेली आहे ते आम्ही काढणार.

(सभागृहात गोंधळ)

**नरेंद्र मेहता :-**

प्रशासनाला ते पटवून पण द्यावे लागेल. आम्ही नागरिकांवर कसा अन्याय करतो. जिथ पर्यंत आपण ते पटवुन दिले नाही खाली संभाषण केले ते काही होणार नाही. रेन्टल प्रॉपर्टी मोठया प्रमाणात आहे ते करोडो रु.ची आपली रेव्हेन्यु होऊ शकतात अनधिकृत बांधकाम जे वाढीव झाले ते रि-असेसमेंट झाले ती मोठी रक्कम होऊ शकते. ओपन लॅन्ड टॅक्सचे २००८ नंतर ज्या ज्या असेसमेंट झाल्या आहेत त्याना आपण फेर व्हेरीफिकेशन केले तर आपल्याला माहिती पडेल की हयाचे मागचे दोन वर्षाचे बाकी आहेत हयाचे तीन वर्षाचे बाकी आहे ते आपल्या नजरेसमोर येतील. ती मोठी रक्कम आहे अनेक बाबी आहेत जसे खण्डेलवालजीनी सांगितले प्लॉटचे कर्मशियल युज असतील वेदर शेड लावुन तो त्याचा कर्मशियल वापर करत असेल किंवा एखादे गॅरेज वर्षानुवर्षे रस्त्यावर असेल तो त्याचा कर्मशियल वापर करत असेल अशा अनेक बाबी आहेत. स्लममधल्या असतील........

**ध्रुवकिशोर पाटील :-**

साहेब आणखी एक बाब तुम्ही विसरलात २००७ ला तुम्ही महापौर होतात आणि २००८ चा शास्ती लागली तेव्हा तत्कालीन आयुक्तांना चुकिचा निर्णय घेतला तेव्हा तुम्ही तो का रद्द केला नाही

(सभागृहात गोंधळ)

नरेंद्र मेहता :-

सन्मा.सदस्य ध्रुवकिशोरजीने सांगितले २००८ ला आले एखादया शासनाचा प्रस्ताव किंवा काही आले तो निलबनाचा प्रश्न आला शासनाने निलंबन केले आपल्या विरोधात आले तरी तो आपल्याला ठेवावा लागला. तसे

शासनाने ते दिले होते ठेवणे माझे कर्तव्य होते. महापौर म्हणुन मी कर्तव्य बजावले पण ठराव हया लोकांनी केला मी ठराव केला नाही.

**जुबेर इनामदार :-**

शासनाच्या नियमाप्रमाणे ठराव करुन दिला तुम्ही तो आता बदलुन दाखवा फक्त बोलु नका.

**नरेंद्र मेहता :-**

महापौर म्हणुन आम्ही आमचे कर्तव्य केलेले आहे. सभागृहाने आपले कर्तव्य केलेले आहे. त्यांना योग्य वाटला तो ठराव घेतला. प्रशासनाला योग्य वाटला तो निर्णय घेतला कोणावर आक्षेप घ्यायचे कारण नाही. त्यावेळी तो ठराव घेतला नसता तर आज ही पाळी आली नसती. मा.महापौर मॅडम मा. आयुक्त महोदय आपण सांगितले आम्ही गव्हरमेन्टला पाठवु कशाला गव्हरमेन्टला पाठवु एखादा अधिकृत इमारत.........

**जुबेर इनामदार :-**

आम्ही ठराव मंजुर केला नसतातर शासनाचा आदेश होता. शासनाचा आदेश पालन करणे प्रशासनाला आदेश पालन करणे प्रशासनाला बंधनकारक आहे.

(सभागृहात गोधळ)

**नरेंद्र मेहता :-**

शहराच्या जनतेनेच विरोध केला मी काय विरोध करु. मिरा भाईंदर महानगर पालिका स्थानिक स्वराज्य संस्था आहे त्याच्यामध्ये कायदयाने जे काही सगळ अधिकार आहेत कोणाला आपल्या हयाच्यावर बंदी आणता येत नाही शासनाने स्पेसिफिक निर्णय घेतला आहे. इललिगल बांधकामावर ७ वा माळा इललिगल आहे तर ६ वा माळाही इलिगल आहे असे होत नाही. एखादा सी.सी. घेतल्यावर मला तुम्ही सांगा त्या व्यक्तिने तुम्हाला लेखी विचारले की ६ व्या माळयावर फ्लॅट घेतो ही बिल्डींग लिगल आहे की इललिगल आहे तुम्ही त्याला सर्टिफिकेट देणार ६ व्या ची परवानगी आहे हे लिगल आहे त्याने ७ वा बांधला तर तुम्ही काय बोलणार आता तु इललिगल खाली ये असे बोलता येणार नाही. ज्या लिगल आहेत त्या लिगल राहतील. मधल्या काळात हा निर्णय झाला होता. ज्याचा ओ.सी.नाही त्या अधिका-याचा कोणती मेहनत घ्यायची नाही काही करायचे नाही म्हणजे ओ.सी. नाही म्हणुन सरसकट त्याला शास्ती लावुन मोकळे व्हा. आपले काम इझी आणि सोपे साहेब ओ.सी.नसेल तर ओ.सी.चा कायदयात वेगळी तरतुद आहे. त्याचा एम.आर.टी.पी. ॲक्ट खाली कायदयाने कारवाई कराना. मुंबईत जे टॅक्सचे नियम आहेत त्याखाली कारवाई करता येत नाही ना ओ.सी. घेतली नाही म्हणुन ही सजा मला देता येणार नाही. ओ.सी. नाही म्हणुन बिल्डींग इललिगल आहे अशातला भाग नाही ज्या बिल्डींग ॲज पर प्लान आहेत. आर्किटेक्ट चे सर्टिफिकेट आहे. त्याचा आपण शास्ती लावु नये. कारण ओ.सी. घेण्यासाठी अनेक अडचणी असतात मुळ अडचणी आहेत त्या यु.एस.इ. फ्लॅटची सरकार आज फ्लॅट घेतही नाही आणि एन.ओ.सी. देत नाही. सगळया ओ.सी. रखडलेल्या आहेत म्हणुन कर आकारणी करताना जेवढा भाग इललिगल असेल ते करावा आणि ज्याच्यावर बेकायदेशीर रित्या आणि जे अधिकृत आहेत आणि त्याच्यावर शास्ती लादली आहे ते त्वरीत रद्द करावे. ही विनंती आपण हया वेळेला ८ करोडची तरतुद केलेली आहे. प्रशासनाची ठाम भुमिका आहे की हयावेळेचा १०० कोटी करु आणि त्यासाठी आपण आमच्याकडे एक मागणी केली आहे की हे पुर्ण मिरा भाईंदर शहर रि-ॲसेसमेन्ट करायचे आहे. कोणाच्या नावात चुक आहे का? कोणाला एरिया कमी जास्त झाला आहे का? जर कमी झाले तर कमी करा जास्त झाले तर जास्त करा टॅक्स कमी लागला तर वाढवुन लावा. वाढवुन लागला तर कमी करा. सगळयाना एकच कायदा हया शहरात अंमलबजावणी करायचे आहे. ह्यासाठी प्रशासनाचे अभिनंदन करतो.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका कार्यक्षेत्रातील विविध मालमत्तांना कर मागणीनुसार/सर्वेक्षणानुसार कर आकारणी करण्यात येते. कर आकारणी करताना संबधीत मालमत्तांचे क्षेत्र, त्यावेळेस मालमत्ता कराचा दर, मालमत्ता या भाडेतत्वावर आहेत का? निवासी, बिगरनिवासी, इ. विचारात घेऊन नविन/सुधारीत कर आकारणी केली जाते.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात, मिरा भाईंदर नगरपालिका काळापासून मालमत्ता कर आकारला गेला आहे, तरी कर आकारणीबाबत अनेक तक्रारी प्राप्त होतात, चुकीच्या क्षेत्रफ़ळाची नोंदणी, निवासी मालमत्तेचे बिगरनिवासी होणॆ, संपूर्ण इमारतीची कर आकारणी झाली आहे. परंतू त्यातील काही सदनिकांना कर आकारणी झालेली नाही, एकाच भागात एकाच क्षेत्रफ़ळाच्या मालमत्तेचे विविध करयोग्य मुल्य असणे, फ़ेरफ़ार करण्यात आलेल्या इमारतींना वाढीव कर आकारणी करण्यात आलेली नाही, एखाद्या इमारतीस सूट दिली तरी त्याची नोंद नसणे, इ. अनियमितता दिसून येत आहे.

या बाबत महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमचे प्रकरण ८ कराधान नियम ९ नुसार ‘आयुक्ताने’ कर आकारणी पुस्तक ठेवले पाहिजे. त्यात (अ) शहरातील **सर्व इमारती व जमिनींची यादी** आयुक्तास योग्य वाटेल अशा रितीने एकतर नावावरून किंवा क्रमांकावरून प्रत्येक इमारत किंवा जमीन ही वेगवेगळी दाखवली पाहिजे आणि तीत प्रत्येकीचे स्थान किंवा स्वरूप यासंबंधी जो तपशील तिची ओळख पटविण्यासाठी त्याच्या मते पुरेसा होईल, असा तपशील असला पाहिजे. (ब) या अधिनियमाच्या व नियमाच्या तरतूदीनुसार ठरवलेले अशा प्रत्येक इमारतीचे व जमिनीचे करयोग्य मुल्य, (क) अशा प्रत्येक इमारतीवर किंवा जमिनीवर बसवण्यायोग्य असलेले मालमत्ता कर असल्यास ते मालमत्ता कर देण्यास प्रथमतः जबाबदार असलेल्या व्यक्तिचे नाव, (ड) अशी कोणतीही इमारत किंवा जमीन सामान्य कराच्या आकारणीस जबाबदार नसेल तर ती अशी जबाबदार

नसल्याबद्दलची कारणे. (ई) त्या वर्षासाठी बसवावयाच्या मालमत्ता कराचे दर महानगरपालिकेने रितसर ठरवले असतील. तसेच महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम १० नुसार प्रत्येक प्रभागासाठी वेगळे आकारणी पुस्तक तयार करणे आणि आवश्यक असल्यास त्याचे भाग पाडणे आवश्यक आहे. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम २० नुसार आयुक्तास तदनंतर प्रत्येक सरकारी वर्षात आकारणी पुस्तकात सुधारणा करता येईल. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम २१ नुसार प्रत्येक सरकारी वर्षी नवीन कर आकारणी पुस्तके तयार करण्याची आवश्यकता असणार नाही.

परंतू मिरा भाईंदर महानगरपालिका कर विभागामार्फ़त काही वेळा सर्वेक्षण केल्यानंतर आकारणी न झालेल्या मालमत्तांची कर आकारणी करण्यात आली आहे. परंतू उपरोक्त नियमानुसार मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व इमारतींची व जमिनीची सर्वंकष यादी तयार करण्याचे काम प्रलंबित आहे.

तरी मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व मालमत्तांची कर आकारणी, वापर बदलाबाबतची नोंद घेऊन त्यानुसार आकारणी, Under Acess मालमत्तांची योग्य आकारणी, इमारतीत वाढीव बांधकाम झाले असतानाही त्यावर आकारणी झाली नाही अशा मालमत्तांची आकारणी, अनधिकृत असतानाही शास्तीसह आकारणी नसलेल्या मालमत्तांची शास्तीसह  आकारणी करून मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मालमत्ता करात भरघोस वाढ निश्चितच होईल. सदरची वाढ ही कायमस्वरुपी असेल. तसेच महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम ९, १० व २० नुसार कर आकारणी पुस्तक तयार होऊन पुढील प्रत्येक वर्षी त्यात सुधारणा करून सदरचे कर आकारणी पुस्तक अद्ययावत होणे शक्य होईल. उपरोक्त नमुद केलेली कर आकारणीची कामे प्रत्यक्ष मिळकतींचे सर्वेक्षण करुन करावयाची आहेत.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व मालमत्तांचे (Revision) होऊन कर आकारणी पुस्तके तयार करणे इत्यादी कामकरीतामिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या सन २०१५-१६ च्या वार्षिक अंदाजपत्रकात रूपये आठ कोटी एवढी तरतुद ठेवण्यात आली आहे. उपरोक्त नमुद केलेली सर्व कामे करणेकामी खाजगी एजंन्सीची नेमणुक करावी लागणार आहे. तरी या कामी खाजगी एजंन्सीची नेमणुक करणे व या  येणाऱ्या कामास व खर्चास आर्थिक व प्रशासकीय मंजुरी देण्यात येत आहे. तसेच अधिकृत इमारती किंवा किंवा अधिकृत बांधकामावर शास्ती लावली असेल तर त्वरीत रद्द करावी असा ठराव मांडत आहे.

**जुबेर इनामदार :-**

आमदार साहेब ठराव होईल का? आढावा आहे म्हणुन विचारतो केला ठिक आहे. बहूमत आहे होऊ शकते. सचिव महोदय करता येतो का? कारण गोषवारा नाही. ही फक्त आढावा बैठक आहे.

**राजेंद्र जैन :-**

जुबेरजी आपने कुछ भी किया है क्या-क्या बोलते हो आप.

**नरेंद्र मेहता :-**

ह्या ठरावाच्या माध्यमातुन आपले मत व्यक्त करत आहोत.

**नगरसचिव :-**

आढावात सुचना होऊ शकते.

**राकेश शहा :-**

माझे अनुमोदन आहे.

**भगवती शर्मा :-**

सचिव साहेब आढावामध्ये ठराव होऊ शकतात

**नगर सचिव :-**

फक्त आढावाचा विषय आहे.

**जुबेर इनामदार :-**

आढावात ठराव होऊ शकतो का ?

**नगरसचिव :-**

सभागृहाने निर्णय घेतला.

**आसिफ शेख :-**

आढावात सुचना करतो त्या विचारात घ्या.

**प्रशांत दळवी :-**

मा. महापौर मॅडम यांनी ठराव वाचून वरती पाठवलेला आहे.

**जुबेर इनामदार :-**

एकाच विषयावर मार्च महिन्यामध्ये हा विषय विषय पत्रिकेवर होता. आता पुन्हा ३ महिन्याच्या आधी होतो. ठराव होऊ शकतो का ?

**नगरसचिव :-**

हा विषय नव्हता प्रकरण क्र. ०३ वर दोन ठराव आले आहेत पहिला ठराव सुचक ध्रुवकिशोर पाटील अनुमोदन सुरेश खण्डेलवाल दुसरा ठराव सुचक श्री. नरेंद्र मेहता अनुमोदन श्री. राकेश शहा. दुसरा ठराव मी मतदानात टाकतो. ह्या ठरावाच्या बाजुने असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

(सभागृहात गोंधळ)

**वंदना चक्रे :-**

मा. आयुक्त महोदय ह्या ठरावाच्या बाजुने आपले काय मत आहे.

**नगरसचिव :-**

सुचक श्री. नरेंद्र मेहता यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

**आसिफ शेख :-**

दोन्ही ठराव एकच आहेत दोन्ही क्लब करुन घ्या विषय संपला.

**नगरसचिव :-**

श्री. ध्रुवकिशोर पाटील ह्यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजुने असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

**मा. महापौर :-**

सुचक नरेंद्र मेहता यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ३४ व विरोधात २६ इतकी मते पडलेली आहेत. नरेंद्र मेहता ह्यांचा ठराव बहुमताने मंजुर करण्यात येत आहे.

**प्रकरण क्र. ०३ :-**

मालमत्ता कर आकारणी व वसुली बाबत आढावा घेणे.

**ठराव क्र. ०३ :-**

मिरा भाईंदर महानगरपालिका कार्यक्षेत्रातील विविध मालमत्तांना कर मागणीनुसार/सर्वेक्षणानुसार कर आकारणी करण्यात येते. कर आकारणी करताना संबधीत मालमत्तांचे क्षेत्र, त्यावेळेस मालमत्ता कराचा दर, मालमत्ता या भाडेतत्वावर आहेत का?, निवासी, बिगरनिवासी, इ. विचारात घेऊन नविन/सुधारीत कर आकारणी केली जाते.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात, मिरा भाईंदर नगरपालिका काळापासून मालमत्ता कर आकारला गेला आहे, तरी कर आकारणीबाबत अनेक तक्रारी प्राप्त होतात, चुकीच्या क्षेत्रफ़ळाची नोंदणी, निवासी मालमत्तेचे बिगरनिवासी होणे, संपूर्ण इमारतीची कर आकारणी झाली आहे. परंतू त्यातील काही सदनिकांना कर आकारणी झालेली नाही, एकाच भागात एकाच क्षेत्रफ़ळाच्या मालमत्तेचे विविध करयोग्य मुल्य असणे, फ़ेरफ़ार करण्यात आलेल्या इमारतींना वाढीव कर आकारणी करण्यात आलेली नाही, एखाद्या इमारतीस सूट दिली तरी त्याची नोंद नसणे, इ. अनियमितता दिसून येत आहे.

या बाबत महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमचे प्रकरण ८ कराधान नियम ९ नुसार 'आयुक्ताने' कर आकारणी पुस्तक ठेवले पाहिजे. त्यात (अ) शहरातील **सर्व इमारती व जमिनींची यादी** आयुक्तास योग्य वाटेल अशा रितीने एकतर नावावरून किंवा क्रमांकावरून प्रत्येक इमारत किंवा जमीन ही वेगवेगळी दाखवली पाहिजे आणि तीत प्रत्येकीचे स्थान किंवा स्वरूप यासंबंधी जो तपशील तिची ओळख पटविण्यासाठी त्याच्या मते पुरेसा होईल, असा तपशील असला पाहिजे. (ब) या अधिनियमाच्या व नियमाच्या तरतूदीनुसार ठरवलेले अशा प्रत्येक इमारतीचे व जमिनीचे करयोग्य मुल्य, (क) अशा प्रत्येक इमारतीवर किंवा जमिनीवर बसवण्यायोग्य असलेले मालमत्ता कर असल्यास ते मालमत्ता कर देण्यास प्रथमतः जबाबदार असलेल्या व्यक्तिचे नाव, (ड) अशी कोणतीही इमारत किंवा जमीन सामान्य कराच्या आकारणीस जबाबदार नसेल तर ती अशी जबाबदार नसल्याबद्दलची कारणे. (ई) त्या वर्षासाठी बसवावयाच्या मालमत्ता कराचे दर महानगरपालिकेने रितसर ठरवले असतील. तसेच महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम १० नुसार प्रत्येक प्रभागासाठी वेगळे आकारणी पुस्तक तयार करणे आणि आवश्यक असल्यास त्याचे भाग पाडणे आवश्यक आहे. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम २० नुसार आयुक्तास तदनंतर प्रत्येक सरकारी वर्षात आकारणी पुस्तकात सुधारणा करता येईल. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम २१ नुसार प्रत्येक सरकारी वर्षी नवीन कर आकारणी पुस्तके तयार करण्याची आवश्यकता असणार नाही.

परंतू मिरा भाईंदर महानगरपालिका कर विभागामार्फ़त काही वेळा सर्वेक्षण केल्यानंतर आकारणी न झालेल्या मालमत्तांची कर आकारणी करण्यात आली आहे. परंतू उपरोक्त नियमानुसार मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व इमारतींची व जमिनीची सर्वंकष यादी तयार करण्याचे काम प्रलंबित आहे.

तरी मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व मालमत्तांची कर आकारणी, वापर बदलाबाबतची नोंद घेऊन त्यानुसार आकारणी, Under Acess मालमत्तांची योग्य आकारणी, इमारतीत वाढीव बांधकाम झाले असतानाही त्यावर आकारणी झाली नाही अशा मालमत्तांची आकारणी, अनधिकृत असतानाही शास्तीसह आकारणी नसलेल्या मालमत्तांची शास्तीसह आकारणी करून मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील मालमत्ता करात भरघोस वाढ निश्चितच होईल. सदरची वाढ ही कायमस्वरुपी असेल. तसेच महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कराधान नियम ९, १० व २० नुसार कर आकारणी पुस्तक तयार होऊन पुढील प्रत्येक वर्षी त्यात सुधारणा करून सदरचे कर आकारणी पुस्तक अद्ययावत होणे शक्य होईल. उपरोक्त नमुद केलेली कर आकारणीची कामे प्रत्यक्ष मिळकतींचे सर्वेक्षण करुन करावयाची आहेत.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील सर्व मालमत्तांचे (Revision) होऊन कर आकारणी पुस्तके तयार करणे इत्यादी कामकरीतामिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या सन २०१५-१६ च्या वार्षिक अंदाजपत्रकात रूपये आठ कोटी एवढी तरतुद ठेवण्यात आली आहे. उपरोक्त नमुद केलेली सर्व कामे करणेकामी खाजगी एजंन्सीची नेमणुक करावी लागणार आहे. तरी या कामी खाजगी एजंन्सीची नेमणुक करणे व या येणाऱ्या कामास व खर्चास आर्थिक व प्रशासकीय मंजुरी देण्यात येत आहे. तसेच अधिकृत इमारती किंवा किंवा अधिकृत बांधकामावर शास्ती लावली असेल तर त्वरीत रद्द करावी असा ठराव मांडत आहे.

**सुचक :- श्री. नरेंद्र मेहता** **अनुमोदन :- श्री. राकेश शाह**

| अ.क्र. | ठरावाच्या बाजूने | अ.क्र. | ठरावाच्या विरोधात | तटस्थ |
|---|---|---|---|---|
| १ | मेहता नरेंद्र लालचंद | १ | सय्यद नुरजहॉ नझर हुसेन | |
| २ | भानुशाली वर्षा गिरीधर | २ | ध्रुवकिशोर मन्साराम पाटील | |
| ३ | कोठारी सुमन रमेश | ३ | डिमेला बर्नड अल्बर्ट | |
| ४ | डॉ. नयना मनोज वसानी | ४ | शिल्पा भावसार | |
| ५ | सिमा कमलेश शहा | ५ | सॅन्ड्रा जेफ्री रॉड्रीक्स | |
| ६ | जैन गिता भरत | ६ | पाटील वंदना विकास | |
| ७ | अरोरा दिपिका पंकज | ७ | प्रभात प्रकाश पाटील | |
| ८ | रावल भगवती जयशंकर | ८ | पाटील सुनिता कैलास | |
| ९ | मेहता डिंपल विनोद | ९ | विराणी रेखा अनिल | |
| १० | मेघना दिपक रावल | १० | पुजारी कांचना शेखर | |
| ११ | प्रतिभा प्रकाश तांगडे-पाटील | ११ | पिसाळ मनिषा नामदेव | |
| १२ | सुजाता रविकांत शिंदे | १२ | वंदना रामदास चक्रे | |
| १३ | सिंग मदन उदितनारायण | १३ | गोविंद हेलन जॉर्जी | |
| १४ | कांगणे यशवंत ठकाजी | १४ | काझी रशीदा जमील | |
| १५ | अनिल बाबुराव भोसले | १५ | इनामदार जुबेर | |
| १६ | कासोदरीया अश्विन श्यामजी | १६ | वेतोसकर राजेश शंकर | |
| १७ | जैन दिनेश तेजराज | १७ | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहिम | **निरंक** |
| १८ | जैन रमेश धरमचंद | १८ | सुर्यकांत खंडोजी म्हात्रे | |
| १९ | डॉ. राजेंद्र जैन | १९ | सामंत प्रमोद जयराम | |
| २० | निलम हरिश्चंद्र ढवण | २० | रकवी सुहास माधवराव | |
| २१ | तारा विनायक घरत | २१ | खण्डेलवाल सुरेश | |
| २२ | जयमाला किशोर पाटील | २२ | वेंचर गिल्बर्ट मेन्डोंसा | |
| २३ | परमार अनिता भरत | २३ | डॉ. आसिफ शेख | |
| २४ | पाटील प्रणाली संदिप | २४ | अशोक तिवारी | |
| २५ | गावंड मंदाकिनी आत्माराम | २५ | नरेश तुकाराम पाटील | |
| २६ | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | २६ | भोईर कमलेश यशवंत | |
| २७ | प्रविण मोरेश्वर पाटील | | | |
| २८ | ठाकुर अरविंद दत्ताराम | | | |
| २९ | शाह राकेश रतिशचंद्र | | | |
| ३० | केळुसकर प्रशांत नारायण | | | |
| ३१ | भोईर भावना राजू | | | |
| ३२ | भोईर राजु यशवंत | | | |
| ३३ | मुन्ना सिंग | | | |
| ३४ | ॲड. रवि व्यास | | | |

**ठराव बहुमताने मंजूर**

**महापौर**
**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

**वंदना चक्रे :-**

माझ्या प्रश्नाचे उत्तर दया.

**आसिफ शेख :-**

कर विभागात काही सुधारणा करायच्या असतील तर आयुक्त संक्षम आहेत.

**मा. आयुक्त सो. :-**

मालमत्ता कर आकारणी व वसुली बाबत आढावा घेणे हा आजच्या पटलावरचा ३ नंबरचा विषय आहे. मा.महापौरांनी हा विषय दिलेला आहे. सभागृहामध्ये चर्चा घडुन आली आहे. ही चर्चा झाल्यावर ह्यावर काय निर्णय दयायचा हा सभागृहाचा प्रश्न आहे.

**वंदना चक्रे :-**

तुमचे काय मत आहे. तुमची काय भुमिका आहे. ठराव होऊ शकतो का?

**मा. आयुक्त सो. :-**

मी ह्याचा खुलासा असा केला आहे की, हा प्रश्न मा.नगर सचिवांनी ह्याच्यामध्ये मालमत्ता कर आकारणी आणि वसुली बाबतचा विषय चर्चेसाठी घेतलेला आहे. ह्याच्यावर काय निर्णय घ्यायचा हा सभागृहाचा विषय आहे. त्यांना मी बंधन करु शकत नाही.

**वंदना चक्रे :-**

ठराव होऊ शकतो का? तुमचे मत आहे काय ?

**मा. आयुक्त सो. :-**

सभागृहामध्ये झालेले जे प्रोसेडिंग आहे ते जर इललिगल असेल तर ते लिगल किंवा इललिगल ते आम्ही तपासून घेऊ.

**नरेंद्र मेहता :-**

नेपाळ देशात जो भुकंप झाला आणि अनेक नेपाळचे नागरीक मृत्यु पावले तसेच इतर देशातले नागरीक त्यादेशात मृत्यु पावले त्या सर्वाना सर्व पक्षाच्या वतीने श्रध्दांजली अर्पित करतो. तसेच शरद पाटील ह्यांचे वडील केशवजी पाटील ह्याचे निधन झाले त्यांना सभागृहाच्या माध्यमातुन श्रध्दांजली वाहतो.

**वंदना चक्रे :-**

मा.आयुक्त महोदय नरेंद्र मेहता साहेबांनी जसे सगळ्या नगरसेवकांचे मानधन झालेल्या भुकंप ग्रस्तांना द्यावे म्हणून माझी अशी सुचना होती की आपण अधिका-यांनी आणि आयुक्तांनी आपल्या महिण्याचा पगार दयावा अशी माझी सुचना आहे.

**मा. आयुक्त सो. :-**

शासनाचे परिपत्रक आल्यावर देण्यात येईल.

**मा. महापौर :-**

सभा संपली असे मी जाहिर करते

**(सभा संपण्याची वेळ ०५:४० वाजता)**

**सही /-**
**महापौर**
**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**

**नगरसचिव**
**मिरा भाईंदर महानगरपालिका**